अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-39, अंक-11, 16-31 जनवरी, 2016

प्रेम की शक्ति

"अगर आप मेरी जैसी सूक्ष्म बुद्धि रखेंगे, तो आपको इस सृष्टि में सर्वत्र अहिंसा का दर्शन होगा। यह जग प्रति क्षण बदलता है। इसमें संहार की इतनी शक्तियां हैं। कोई स्थिर नहीं रह सकता। लेकिन फिर भी मनुष्य-जाति का संहार नहीं हुआ, इसका यही अर्थ है कि सब जगह अहिंसा ओतप्रोत है। मैं उसका दर्शन करता हूं। गुरुत्वाकर्षण-शक्ति के समान अहिंसा संसार की सारी चीजों को खींचती है। प्रेम में यह शक्ति भरी हुई है। मैं तो अपने को अहिंसा का साइंटिस्ट मानता हूं न? इसलिए मैं उसके नियमों को जानता हूं और देखता हूं।"

–महात्मा गांधी

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित
अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य-अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक
वर्ष : 39, अंक : 11, 16-31 जनवरी, 2016

संपादक
बिमल कुमार
मो. : 9235772595

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ, साधना केन्द्र
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

मूल्य	:	पांच रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC No. UBIN-0538353
Union Bank of India

विज्ञापन दर

पूरा पृष्ठ	:	2000 रुपये
आधा पृष्ठ	:	1000 रुपये
चौथाई पृष्ठ	:	500 रुपये

इस अंक में...

1. संपादकीय : गांधी का हिन्दुत्व बनाम... 2
2. उस जमाने के सबसे बड़े क्रांतिकारी... 3
3. अनुभव सागर गांधीजी... 4
4. गांधीजी की साधना... 7
5. आर.एस.एस. : नौ दशक का... 9
6. मनुष्य का स्वभाव... 10
7. शोध से ज्यादा श्रद्धा की जरूरत... 11
8. अमीरों के हितों में पिसते गरीब... 12
9. बाजार में बोतलबंद हवा... 14
10. प्रदूषण नियंत्रण के प्रति उदासीनता... 16
11. आत्ममंथन से सुलझेंगी ये उलझी... 18
12. धन-सम्पत्ति का अर्जन... 19
13. कविता : बापू! एक युग थे... 20

संपादकीय

गांधी का हिन्दुत्व बनाम गोडसे का हिन्दुत्व

आज से 68 वर्ष पूर्व गोडसे और उसके साथियों को लगा कि उनके हिन्दुत्व को गांधी के हिन्दुत्व से खतरा है। इसलिए गांधी के देह को समाप्त करने का कार्य उन्होंने किया। गांधी के हिन्दुत्व को गोडसे का हिन्दुत्व खत्म करना चाहता था। पिछले 70 वर्षों से अभियान चल रहा है कि गोडसे जिस हिन्दुत्व का प्रतिनिधित्व करता था, वह हिन्दुत्व गांधी-विचार को खत्म कर दे। एक कुचक्र यह भी किया जाता रहा कि तमाम राष्ट्रीय विभूतियों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाये, जैसे वे गांधी के विकल्प हों तथा उनकी विरासत, गोडसे जिस हिन्दुत्व का प्रतिनिधित्व करता था, उस हिन्दुत्व के पास है।

गांधी ने हिन्दुत्व को सर्वधर्म समभाव के लिए प्रेरणास्रोत माना, क्योंकि वे हिन्दुत्व की आध्यात्मिक परंपराओं से जुड़े रहे थे। गोडसे का हिन्दुत्व सामाजिक-राजनीतिक सत्ता की लड़ाई का हिस्सा था, जो मूलतः ईसाई व मुस्लिम विरोधी था; तथा इस हिन्दुत्व का हिन्दुत्व की आध्यात्मिक परंपराओं से कोई संबंध नहीं था। इनके लिए ईसाई व मुस्लिम सामाजिक-राजनीतिक ईकाई थे तथा उनकी आध्यात्मिक परंपराओं से ये लोग पूरी तरह अनभिज्ञ थे/हैं। धर्म के मूल में जो आध्यात्मिक परंपराएं होती हैं, उनसे अनभिज्ञ होने के कारण ही, ये सर्वधर्म समभाव को नहीं समझ पाते हैं।

आध्यात्मिकता से जुड़े होने के कारण ही गांधीजी का हिन्दुत्व अंतरात्मा की शक्ति बढ़ाने वाला है। सभी की अंतरात्मा की शक्ति बढ़ाने वाला है। गांधीजी यह भी मानते थे कि प्रत्येक धर्म का मूल यही है कि व्यक्ति के अंतरात्मा की शक्ति बढ़े। अहिंसा ही अंतरात्मा की शक्ति के बढ़ने का माध्यम बन सकती है, इस कारण उनका अहिंसा पर जोर था। अंतरात्मा की शक्ति एवं अहिंसा की बुनियाद पर ही सर्वधर्म समभाव के विचार को खड़ा किया जा सकता है।

मनुष्य के अंतरात्मा की शक्ति को बढ़ाने का अभियान किसी जाति, धर्म व संप्रदाय में सीमित नहीं किया जा सकता है। इतना ही नहीं, औपनिवेशिक शासन का विरोध, केन्द्रीकृत सत्ता का विरोध, पूंजीवाद का विरोध तथा सभी प्रकार के शीर्षमुखी केन्द्रीकृत संरचनाओं का विरोध भी वे इसी कारण करते थे, क्योंकि ये सभी मनुष्य की अंतरात्मा की शक्ति को कमजोर करने वाली संरचनाएं और संस्थाएं हैं। इनमें ऊपर से दिये आदेश को मानने व पालन करने का आग्रह है। अंतरात्मा की आवाज के आधार पर कुछ करने का, कुछ नवीन पथ बनाने की छूट इसमें नहीं है।

गोडसे के हिन्दुत्व की परंपरा ताकत की आक्रामकता तथा केन्द्रीकृत श्रेणीबद्धता आधारित आदेश पालन की समर्थक रही है। इसी कारण यह पूंजीवाद समर्थक हिंसा-शक्ति, दंड-शक्ति समर्थक धारा रही है। अपनी आक्रामकता को धार देने तथा हिंसा को संगठित करने के लिए इन्होंने मुसलमानों को निशाना बना रखा है। अपनी इस मूल प्रवृत्ति के कारण ही गोडसे के हिन्दुत्व को किसी न किसी को निशाने पर रखना होता है।

आजादी के आंदोलन ने जिस भारत की कल्पना की तथा गांधी ने जिसे परवान चढ़ाया, भारत का वह स्वरूप भी सर्वधर्म समभाव के विचार से जुड़ा था। अंग्रेजों ने भारत की आत्मा के इस शक्ति को तोड़ने के लिए समाज को सांप्रदायिक आधार पर तोड़ने का काम शुरू किया था। मुस्लिम लीग का निर्माण तथा मुस्लिम विरोधी हिन्दू संगठन का निर्माण अंग्रेजी शासन की देन है तथा भारत की आत्मा, उसके स्वरूप को ध्वस्त करने का माध्यम बनाये गये थे।

अंग्रेज इस काम को राजनीतिक षड्यंत्रों के माध्यम से कर रहे थे। वे समझते थे कि भारत की आत्मा को वे भारत-विभाजन के माध्यम से नष्ट कर सकेंगे। गांधी चट्टान की तरह खड़े थे कि भारत का राजनीतिक विभाजन, भारत की आत्मा को खत्म नहीं कर सकेगा। गोडसे का हिन्दुत्व भी यह नहीं कर सकेगा। क्योंकि गोडसे का हिन्दुत्व भारत की आत्मा व अस्मिता का निषेध करने वाला हिन्दुत्व है।

बिमल कुमार

30 जनवरी : गांधी-निर्वाण दिवस पर नमन

उस जमाने के सबसे बड़े क्रांतिकारी थे गांधीजी

❑ लोकनायक जयप्रकाश नारायण

असल में युद्ध को मिटाने के लिए हमें युद्ध को उखाड़ना पड़ेगा। युद्ध की जड़ें लोगों के चित्त में है, उनकी शिक्षा-पद्धति में है, उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं में और उनकी जीवन-प्रणालियों में है। जब तक इन सारे क्षेत्रों को सँभाला नहीं जायेगा, तब तक हिंसा को और युद्ध को दुनिया से नेस्त-नाबूद करने की हमारी चिन्ता बांझ ही बनी रहेगी।

गांधीजी का अपना एक जीवन-दर्शन था, उनके अपने कुछ सामाजिक सिद्धांत थे, और राज्य-व्यवस्था के विषय में भी कुछ उनकी अपनी एक निराली कल्पना थी। इसीलिए जब हमें स्वराज्य मिला, तो हमको विदेशी कल्याण राज की अथवा समाजवाद या साम्यवाद की नकल करने की कोई जरूरत नहीं थी। स्वराज्य के बाद के ध्येय के लिए गांधीजी ने इन सबके बिलकुल भिन्न और नया, सर्वोदय का विचार हमारे सामने रखा ही था।

भले ही हम चारों तरफ से सब कुछ लें। समाज-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान आदि सब में जो अच्छा हो, उसे हम जरूर ग्रहण करें। न कभी ज्ञान की उपेक्षा करें, और न सत्य की खोज में कोई रुकावट ही खड़ी करें। लेकिन जो कुछ भी लें, उसे अपनी परिस्थिति और अपने वातावरण के साथ अँटने वाला बनाने का प्रयत्न करें। उसकी जड़ें भारत की भूमि में, भारत के इतिहास में, भारत की संस्कृति में और भारत की आत्मा में होनी चाहिए। इसीलिए गांधीजी ने कहा था : *''मैं अपने घर की सब खिड़कियां खुली रखना चाहता हूं और चाहता हूं कि चारों ओर की हवाएं उनमें से गुजरें, लेकिन ये हवाएं ऐसी नहीं होनी चाहिए कि मेरे घर को ही उखाड़ कर फेंक दें।''*

इसी के साथ गांधीजी इस बात को भी भलीभांति समझ चुके थे कि अब 'लोगों की सम्मति से बनने वाली सरकार' ही काफी नहीं है, अब तो खुद 'लोगों की अपनी सरकार' होनी चाहिए, जिससे लोग अपने सब व्यवहार खुद ही चलाने लगें। इसी दृष्टि से उन्होंने कहा था कि ''स्वराज्य की बुनियाद ग्रामराज्य है।'' वे चाहते थे कि अधिक-से-अधिक अधिकार जनता के हाथ में रहने चाहिए।

लेकिन इस ग्रामराज्य का मतलब बैलगाड़ी की संस्कृति नहीं था। आज के गांवों को तो गांधीजी घूरों के ढेर कहा करते थे। वे जिस गांव की कल्पना करते थे, वह तो खेती और उद्योग के कामों में लगा छोटे-छोटे समुदायों की बस्ती वाला गांव था। यदि हम आज की दुनिया को बचाना चाहते हैं, तो हमको गांधीजी के 'ग्रामस्वराज्य की कल्पना' पर ध्यान देना ही पड़ेगा।

वे हिंसा की जड़ को ही उखाड़ डालना चाहते थे : गांधीजी एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना चाहते थे, जिसमें हिंसा के लिए रंचमात्र भी स्थान न रहे और मनुष्य-जाति युद्ध के अभिशाप से मुक्त बन सके। अतएव इसके लिए हमें ठेठ बुनियाद से ही प्रयत्न करने पड़ेंगे और अहिंसा की शक्तियों का विकास करना होगा। पश्चिम के शांतिवादियों का ध्यान अभी इस दिशा में विशेष रूप से गया नहीं है। वहां शांत प्रतिकार, असहयोग अथवा विरोध के प्रदर्शनात्मक कामों पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। किन्तु दूसरे लोग युद्ध के लिए तेजी के साथ तैयारियां करते रहें और शांतिवादी के नाते हम यह सोचते रहें कि जब कभी युद्ध हो, तो हमारा कर्तव्य है कि हम युद्ध का प्रतिकार करें और उसे रोकें, मेरे ख्याल में यह स्थिति बहुत ही बेढंगी बनेगी।

असल में युद्ध को मिटाने के लिए हमें युद्ध को उखाड़ना पड़ेगा। युद्ध की जड़ें लोगों के चित्त में है, उनकी शिक्षा-पद्धति में है, उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं में और उनकी जीवन-प्रणालियों में है। जब तक इन सारे क्षेत्रों को सँभाला नहीं जायेगा, तब तक हिंसा को और युद्ध को दुनिया से नेस्त-नाबूद करने की हमारी चिन्ता बांझ ही बनी रहेगी।

इस बात को गांधीजी ने अच्छी तरह समझ लिया था। यही कारण था कि उन्होंने व्यक्ति और समाज के मानस में आमूल परिवर्तन करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया था। उनके सारे रचनात्मक कार्यक्रम, शिक्षा की पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन करने पर उनका जोर, ग्रामस्वराज्य की भावना से व्यक्त होने वाली आर्थिक और सामाजिक सत्ता के और लोकतंत्र के विकेन्द्रीकरण के लिए उनका जोरदार आग्रह, सादे और नैतिक जीवन की उनकी हिमायत, सब धर्मों, जातियों, वंशों आदि की समानता के लिए उनका अनुरोध, अंतर्राष्ट्रीयता के साथ समरस होकर चलने वाली राष्ट्रीयता की उनकी भावना—इन सारी बातों का एक ही अर्थ होता है कि वे हिंसा की जड़ों को लोगों के चित्त में से पूरी तरह उखाड़ डालना चाहते हैं। कुछ सतही सुधारों से उनको कोई संतोष नहीं था। उनका प्रयत्न ठेठ बुनियाद से ही नवनिर्माण करने का रहा।

मैं एक अहिंसक क्रांतिकारी अवश्य हूं : तो गांधीजी का जो रचनात्मक कार्यक्रम था, उसके मूल में एक विचार था, एक तत्त्व था, एक जीवन-दर्शन था, एक समाज-दर्शन था। उन्होंने रचनात्मक कार्यकर्ताओं से कहा था कि कुछ छोटी-मोटी सेवाएं करना, बेकारों को थोड़ा काम दिला देना, उत्पादन का कुछ काम करना और गरीबों की जेबों में दो पैसे अधिक पहुंचाना, केवल यही हमारा उद्देश्य नहीं है बल्कि→

30 जनवरी : गांधी-निर्वाण दिवस पर नमन

अनुभव सागर गांधीजी

❑ लक्ष्मणशास्त्री जोशी

शूरता का उद्‌गम हिसाब में नहीं होता है। उसके लिए स्फूर्ति, प्रतीति चाहिए। गांधीजी का प्रत्यय अत्यन्त अद्‌भुत था। तूफान से पहले पेड़ का एक पत्ता भी नहीं हिलता, परंतु थोड़े ही समय में प्रचंड वेग से चलने वाली आंधी बड़े-बड़े पेड़ों को भी जड़ से उखाड़ देती है। पर्वतों का आत्मविश्वास भी डगमगाने लगता है। गांधीजी की बुद्धि कुछ इसी तरह की थी।

महात्मा गांधी जब अमरस्वरूप में विलीन हुए, उस समय मैं कलकत्ते में था। उस घटना के बारे में मैंने अपने लड़के को जो पत्र लिखा, उसमें यह कहा था कि महात्मा गांधी का हत्याकारी मनुष्य जाति में पैदा हुआ, यह मनुष्य जाति का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। महात्मा गांधी जब हरिजन दौरे पर थे, उस वक्त 1935 में उनके ऊपर पूना में बम फेंका गया। सुदैव से उसका निशाना चूक गया। उस समय मैं पूना में था। इस दुर्घटना में से वे सुरक्षित रहे, इसके उपलक्ष्य में पूना शहर में एक सभा हुई। मुझे स्मरण आता है कि उस सभा में भी मैंने इसी तरह का कुछ कहा था। गांधीजी की मृत्यु से मुझे अतिशय दुःख हुआ। वैसे मेरा स्वभाव शोक करने का नहीं है। परंतु उनकी मृत्यु से मुझे शोक होने का कारण यह है कि उनका खून मेरी जाति के व्यक्ति ने किया। मेरी जाति से मतलब ब्राह्मण जाति नहीं बल्कि मानव जाति है। मनुष्यों में जन्म पाने का भाग्य जिसे प्राप्त हुआ, ऐसे व्यक्ति ने यह हत्या की, इसका मुझे बहुत दुःख हुआ। कारण कि गांधीजी का जन्म मानव जाति के महत्त्वपूर्ण मूलभूत प्रश्न हल करने के लिए हुआ था।

मानवता का विलक्षण मार्ग : मानव जाति के मुख्य प्रश्न हल करने में अद्यतन विज्ञान या शस्त्रास्त्र अर्थात केवल बाह्य साधन असमर्थ हैं। ये प्रश्न शस्त्रों से हल नहीं हो सकते। उनको हल करने के लिए मनुष्य के पास अंतःकरण और बुद्धि में, जिनका प्रत्यय हुआ है ऐसे उच्चतर मूल्य हैं। ये उच्चतर मूल्य ही मनुष्य के श्रेष्ठ और प्रभावशाली साधन हैं। इसी विलक्षण मार्ग से गांधीजी जा रहे थे। वह मानवता का मार्ग था। श्रेष्ठ और महान मार्ग था। मनुष्य पशु नहीं है। उसे जीवन पर और विश्व पर अधिकार, अध्यात्म के कारण यानी मानसिक सामर्थ्य के कारण प्राप्त हुआ है।

अनुभूतिजन्य तत्त्वज्ञान : ऐसा देखा जाता है कि संस्कृति का इतिहास मनुष्य के मानसिक सामर्थ्य का विकास है। पहले मैं समझता था कि गांधीजी श्रद्धावादी हैं। श्रद्धावाद बुद्धिवाद की अपेक्षा गौण है। बुद्धि हर हालत में श्रेष्ठ है। यह ठीक है, फिर भी ज्ञानशास्त्र में यह सवाल होता है कि बुद्धिवाद

→हमें तो अपने इन रचनात्मक कार्यक्रमों की मदद से समाज में अहिंसक क्रांति लानी है। हमारा मूल उद्देश्य है, अहिंसक समाज का निर्माण करना। गांधीजी और चाहे जो रहे हों, पर सबसे पहले वे एक क्रांतिकारी थे, उन्होंने खुद ही लिखा है : ''कुछ लोगों ने मुझे मेरे जमाने का सबसे बड़ा क्रांतिकारी कहा है। 'सबसे बड़ा' कहना गलत हो सकता है, किन्तु मैं अपने-आप को एक क्रांतिकारी; एक अहिंसक क्रांतिकारी, अवश्य मानता हूं।''

अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले गांधीजी ने कहा था कि ''मेरे काम का सच्चा आरम्भ तो अब हो रहा है और अपने इस ध्येय को सिद्ध करने के लिए मैं सवा सौ सालों तक जीना चाहता हूं।'' उनके इस कथन में उनका युवकोचित उत्साह तो प्रकट हुआ ही है, लेकिन इसी के साथ इससे यह भी प्रकट होता है कि उन्होंने अपने सामने कितना बड़ा ध्येय रखा था और उस ध्येय की सिद्धि के लिए वे कितना पुरुषार्थ करना चाहते थे।

सब विचारधाराओं को सर्वोदय में विलीन होना होगा : अपने इस देश में गांधीजी के विचारों का जितना अध्ययन होना चाहिए, उतना हो नहीं पाया है। गांधीजी के जीवनकाल में मैं भी उनके विचारों को ठीक से समझ नहीं सका था। मेरे अपने अनुभव से मुझे लगता है कि हम विदेशी तत्त्वज्ञान का और विदेशी विचारधाराओं का अध्ययन तो करते हैं, किन्तु अपनी ही पुण्यभूमि में जनमे नये तत्त्वज्ञान के बारे में हमारा अज्ञान भयंकर ही होता है। अब मुझे यह विश्वास हो चुका है कि गांधीजी के विचार हमारे लिए ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया के लिए है। मैं तो देख रहा हूं कि आज अपने को 'न्यू लेफ्ट' यानी नये वामपंथी कहलाने वाले क्रांतिकारी नौजवान भी मानो गांधीजी के ही विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त कर रहे हैं। इसके बावजूद, आज अपने ही देश में गांधीजी की विचारधारा के बारे में भारी अज्ञान और उपेक्षा पायी जाती है। गांधीजी का नाम तो बहुत लिया जाता है, लेकिन उनके विचारों का अध्ययन नहीं किया जाता। मैं यह कहना चाहता हूं कि आज गांधी-विचार देश और दुनिया के लिए एक तारक उपाय है। अब आज की अपनी स्थिति में मैं यह अवश्य ही मानता हूं कि इस समय की दूसरी सभी सामाजिक विचारधाराओं और प्रणालियों की तुलना में सर्वोदय का विचार स्पष्ट रूप से आगे बढ़ा हुआ और उन्नत विचार है। मेरा अपना यह अटल विश्वास है कि यदि दुनिया में कभी भी सनातन, बंधुता, स्वतंत्रता और शांति की स्थापना करनी होगी तो समाजवाद आदि सब वादों को अंत में सर्वोदय में विलीन होना ही पड़ेगा। ❑

का आरम्भ स्थान कहां है? आखिर बुद्धि आती कहां से है? श्रद्धा, बुद्धि का फल है। ज्ञात सत्य के लिए अनुराग का ही नाम श्रद्धा है। बोध का उद्‌गम अनुभव में से होता है। अनुभव सारे ज्ञान की बुनियाद है। अनुभव में से शास्त्र का निर्माण होता है। जो शास्त्र अनुभूति में से अवतीर्ण होता है, वही शास्त्र सत्-शास्त्र सिद्ध होता है। जिनका अनुभव विशाल होता है, उनकी बुद्धि भी श्रेष्ठ होती है। फ्रांसीसी दार्शनिक बर्गसाँ का तत्त्वज्ञान अनुभूति की नींव पर रचा गया है। वह बुद्धि को गौण स्थान देता है। बुद्धि के लिए सत्य गम्य नहीं है। बुद्धि से परे स्फूर्तिमय प्रज्ञा सत्य का आकलन करती है, ऐसा बर्गसाँ का सिद्धांत है। लेकिन सफूर्तिमय प्रज्ञा और तर्कात्मक बुद्धि एक-दूसरे की पूरक हैं। ये दोनों मानसिक अवस्थाएं एक-दूसरे की संगति में काम करती हैं।

जीवन के नियमों का साक्षात्कार : बेथोवेन एक जर्मन संगीतज्ञ था। संगीत का आस्वाद तो सभी लेते हैं लेकिन बेथोवेन को ध्वनि की सूक्ष्म संवित्ति होती थी। उसे उच्चतर ध्वनि का साक्षात्कार होता था। प्रज्ञा, साक्षात्कार, अनुभूति, श्रेष्ठ शक्ति है। यह एक विलक्षण वस्तु है। अलौकिक और अप्रतिम कर्तृत्व का रहस्य इस अद्‌भुत शक्ति में छिपा हुआ है। जिन्हें वह प्राप्त नहीं होती, उनका क्षेत्र मर्यादित ही मान लेना चाहिए। यह साक्षात्कार जगद्‌विजयी धुरंधर सेनापतियों को होता है। नेपोलियन लड़ाई से पहले विशेषज्ञों से परामर्श लेता था और कुछ निश्चित योजनाएं भी बना लेता था। परंतु एक बार लड़ाई के मैदान में उतरने पर वह अपने इन निश्चयों को बदल भी देता था। इसलिए विजयश्री उसे वरमाला पहनाती थी। यही बात महान कलाकारों, तत्त्ववेत्ताओं, कवियों और विज्ञानवेत्ताओं के लिए भी लागू है। कुछ व्यक्तियों में साक्षात्कार या प्रतीति का स्वरूप अत्यन्त अद्‌भुत होता है। गांधीजी को धर्म के द्वारा मानवीय जीवन के नैतिक नियमों की प्रतीति हुई थी। धर्म संस्था ने मनुष्य के नैतिक प्रत्ययों को तेजस्वी रखने का प्रयत्न किया। इसलिए आज पश्चिम के कई देशों में कुछ बड़े-बड़े वैज्ञानिक धर्म का सहारा लेने की कोशिश कर रहे हैं।

आंधी का देवता गांधी : महात्मा गांधी के आंदोलन और लड़ाइयां हमने आंखों से देखी हैं। हम बहुत बड़भागी हैं। उनके जीवन का अर्थ कई बड़े-बड़े बुद्धिमान पंडित भी नहीं लगा सके। बुद्धिमता वरिष्ठ लोकमान्य तिलक ने गांधीजी से एक दफा कहा, 'आपके सत्याग्रह के लिए हजार आदमी चाहिए। वे कहां से दें? जब लोग ही तैयार नहीं हैं तो यह सब कैसे मुमकिन हो?' जो लोग अंगुलियों पर गिनते हैं और हिसाब पर भरोसा रखते हैं, उन्हें कल्पना के सामर्थ्य का प्रभाव प्रतीत नहीं होता। शूरता का उद्‌गम हिसाब में नहीं होता है। उसके लिए स्फूर्ति, प्रतीति चाहिए। गांधीजी का प्रत्यय अत्यन्त अद्‌भुत था। तूफान से पहले पेड़ का एक पत्ता भी नहीं हिलता, परंतु थोड़े ही समय में प्रचंड वेग से चलने वाली आंधी बड़े-बड़े पेड़ों को भी जड़ से उखाड़ देती है। पर्वतों का आत्मविश्वास भी डगमगाने लगता है। गांधीजी की बुद्धि कुछ इसी तरह की थी। उनका प्रत्यय बहुत महान था। यह महान प्रत्यय पंडितों की प्रज्ञा से भी कई दफा आगे बढ़ जाता है। 1920 में गांधीजी ने घोषणा की कि एक साल में स्वराज प्राप्त करा देता हूं। कई लोगों ने हंसी उड़ायी। बुद्धिमानों ने सोचा, इतनी जल्दी स्वराज कैसे मिलेगा? बगैर लड़ाई के किसी को स्वराज मिला है? लेकिन दरअसल तो यही कहना चाहिए कि हिन्दुस्तान को एक साल में ही स्वराज मिला। राष्ट्रों की आयु में पचीस वर्ष एक साल से भी कम हैं। हमने देखा है कि उन्नीस सौ बीस और तीस में सारा देश दहल उठा। बुद्धिमानों को इसकी कोई कल्पना नहीं थी। गांधीजी का सारा जीवन ऐसा ही था। गांधीजी का जीवन मानो आंधी के देवता का ही जीवन था।

मानवता ही नैतिकता : संसार में आज तक गांधीजी जैसे जो-जो महापुरुष हुए, चाहे वे आस्तिक रहे हों या नास्तिक, वे सब मानवता के इस मूल तत्त्व तक पहुंच गये थे। कार्लमार्क्स मूलतः मानवतावादी था। उसका ध्येयवाद मनुष्यव्यापी था। कार्लमार्क्स के विचारों के कई मनुष्य अतुल स्वार्थ त्याग के लिए प्रवृत्त हुए हैं। क्रांति की आग में भस्मसात् हुए हैं। यह प्रेरणा मार्क्स के अर्थवाद में से पैदा नहीं हो सकती। उसका उद्‌गम नीतिशास्त्रों में है। मार्क्स का 'कैपिटल' नामक ग्रंथ बहुत थोड़े लोग समझ पाते हैं। मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि संसार में कम्युनिस्ट पार्टी में भी ऐसे बहुत थोड़े लोग हैं, जिन्होंने इस ग्रंथ का अध्ययन करके उसे समझा हो। फिर भी मार्क्स ने इतने बड़े पैमाने पर दुनिया को मंत्रमुग्ध कैसे कर डाला? यह चमत्कार उसके शास्त्रज्ञान का नहीं है। मार्क्स ने दास बने हुए मानव को हृदय का स्फूर्तिदायक संदेश दिया, आश्वासन दिया, और भविष्य काल के लिए आशा का प्रकाश दिया। इसीलिए यह जागतिक उथल-पुथल हुई। इस प्रकार का ध्येयवाद नैतिक होता है, क्योंकि वह मनुष्य मात्र को व्याप्त करता है। मनुष्य मूलतः नीतिमान है और व्यापकता नीति का स्वभावधर्म है। बुद्धि का तत्त्व भी व्यापक होता है। विशेष की तरफ से सामान्य की ओर ले जाना बुद्धि का काम है। व्यापकता की पूर्ण रूपता ही ब्रह्मरूपता है। यही जीवन का अबाधित सिद्धांत है। नीति और सत्य मानवीय जीवन के आधार हैं। नीति सबसे पहले माता में प्रकट होती है। इसलिए गांधीजी स्त्रियों को अधिक मानते थे। मनुष्य के जन्म के साथ ही धर्मशास्त्र का भी जन्म हुआ। नीति के नियम तोड़ने पर उसके परिणाम मनुष्यों को भुगतने पड़ते हैं। उद्‌गामी तर्क (इंडक्टिव लौजिक) से यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है, क्योंकि उद्‌गमन का आरंभ साक्षात्कार से होता है। विशेष से सामान्य की तरफ जाना तभी संभव होता है। सृष्टि-नियम मानवीय जीवन की कक्षा में नीति के रूप से प्रकट होते हैं। सृष्टि-नियमों

का पालन मनुष्य को करना ही पड़ता है।

प्रेम, जीवन का मध्य-बिन्दु : गांधीजी भारतवर्ष में पैदा हुए थे, किन्तु वे केवल भारतीय नहीं थे। वे कहा करते थे कि मैं अंग्रेजों का मित्र हूं। यह बात संपूर्ण रूप से सत्य है। इस सत्य को न पहचानकर अंग्रेजों के द्वेष से प्रेरित होकर लोग गांधीजी के अनुयायी बने। अब उस द्वेष का विषय नहीं रहा। इसलिए कर्तव्य तत्परता जड़ नहीं पकड़ती। द्वेष की जगह प्रेम को मिलनी चाहिए। प्रीति शुद्ध और अगाध बननी चाहिए। द्वेष से जो पराक्रम होते हैं, उनसे मनुष्य की प्रगति नहीं होती। प्रेम-प्रेरित पराक्रम मनुष्य जाति के लिए अचल अविनाशी सोपान-परंपरा का निर्माण करते हैं। ऐसी सोपान-परंपरा का निर्माण करने वालों में महात्मा गांधी विराजमान हैं। इसलिए संसार को यह अनुभव होता है कि उनकी मृत्यु से अपरिमित हानि हुई।

इंग्लैंड के महान प्रज्ञावंत शास्त्रज्ञ ह्वाइट हेड ने अपनी 'ऐडवेंचर्स ऑफ आइडिया' नामक पुस्तक में गांधीजी के हृदय-परिवर्तन के आंदोलन का अत्यन्त आदर के साथ उल्लेख किया है। और, उसे मनुष्य के इतिहास का एक महान प्रयोग कहकर उसका गौरव किया है। लोगों के विचारों में मौलिक परिवर्तन करना एक महान सिद्धांत है। इसी सिद्धांत के अनुसार जनतंत्र का निर्माण होता है। इसमें मानवीय पराक्रम है, इस पराक्रम की स्फूर्ति गांधीजी को मिली।

प्राणदेवता का उपासक : राजेन्द्रबाबू ने कहा, ''गांधीजी की हत्या का कारण हमारा पाप है।'' बात ठीक है। गांधीजी केवल राजनैतिक पुरुष नहीं थे। प्रधानतः वे साधु पुरुष थे। उनके शरीर का नाश किया गया लेकिन वे शरीर से ही नहीं बल्कि आत्मा से भी जाते रहे। गांधीजी की मृत्यु से पहले हमारा देश द्वेष के पाप में डूबा हुआ था। इस देश में उनके रहने के लिए जगह नहीं थी। वे प्राणदेवता के उपासक थे। उपनिषद् में याज्ञवल्क्य कहते हैं, ''प्राण सबसे महान एक ही देवता है।'' उस प्राणदेवता के मंदिर में अर्थात मानव समाज में और विशेषकर भारतवर्ष में उस देवता का विरोधी पातक अपना प्रभाव जमाने लगा। इसलिए प्राणदेवता का यह भक्त अपने देवता की उपासना के लिए संघर्ष करता हुआ, इस संसार से चल बसा। परंतु वह केवल शरीर से ही नहीं गया अपितु अपनी आत्मा को, नैतिक स्फूर्ति को साथ लेकर चला गया।

वीरता का महामेरू : गांधीजी कहते थे कि नीति में जो अपवाद होते हैं वे दोषरूप ही हैं। 'जैसे को तैसा' यह सिद्धांत अपथ्यकर है। गांधीजी ने कहा 'जो तुमसे द्वेष करें उनसे तुम प्रेम करो। प्रेम जीवन का मध्यबिन्दु है। उसी में मनुष्य का पराक्रम है। जो लोग, जो धर्म, जो संस्कृतियां इस मार्ग से दूर गयीं, उनका कहीं पता भी नहीं लगता। वे हमेशा के लिए नष्ट हो गयीं।' हमें गांधीजी के तंत्र और मंत्र के अर्थ को भलीभांति समझ लेना चाहिए। लोग प्रायः केवल तंत्र से चिपटते हैं और मंत्र को छोड़ देते हैं। राग, द्वेष, मत्सर इत्यादि विकारों से जो लड़ते हैं, वे सच्चे पराक्रमी हैं। ऐसी सारी शूरता के महामेरु महात्मा गांधी थे। उन्हें सत्य दिखाई देता था और इसलिए वे लगातार उसकी तरफ आगे-आगे बढ़ते जाते थे। वे थकते नहीं थे। सत्य का शोधक थकता नहीं है। शास्त्रों का और कला का विजयी इतिहास कभी न थकने वाले सत्यान्वेषकों का बनाया हुआ है।

अनुभवसागर गांधीजी : महात्मा गांधी की गणना कोई पंडितों और बुद्धिवादियों में न करे। बुद्धिमत्ता और पांडित्य का आधार अनुभव है। गांधीजी अनुभव सागर थे। मनुष्य को द्वेष से जो स्फूर्ति मिलती है वह उसे मृत्यु की तरफ ले जाती है, अमरत्व की ओर नहीं। पक्ष, संघ, दल, द्वेष की प्रेरणा से बढ़ते हुए दिखायी देते हैं परंतु ये सब अंत में मृत्यु का आलिंगन करते हैं। प्रेम से मिलने वाली प्रेरणा ही सत्य प्रेरणा है। जिन संस्कृतियों ने इस प्रेरणा को नहीं अपनाया, उनके कब्रिस्तान सब तरफ दिखायी देते हैं। यदि द्वेष की महिमा बढ़ी तो हमारी संस्कृति की भी यही गति होगी।

गांधीजी का पुनरुत्थान : गांधीजी इस देश में से निर्वासित हो गये हैं। यहां के वायुमंडल में उनके लिए सांस लेने की भी गुंजाइश नहीं थी। कहा जाता है कि ईसा का तीसरे दिन पुनर्जन्म हुआ। क्या इस देश में गांधीजी के पुनरुत्थान के लिए अनुकूल परिस्थिति पैदा होगी? उनकी दिव्य स्फूर्ति का तत्त्व समझ लीजिए, मृत्यु अमरता का ढंकना है। गांधीजी की आत्मा का अभिवादन करता हूं। ❑

संपादक के नाम पत्र

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार!

'सर्वोदय जगत' का 1-15 नवंबर, 2015 का अंक पढ़ा। अंक में बहुत ही विशेष मिला, जैसे-विनोबाजी का ब्रह्मनिर्वाण दिवस और जे. बी. कृपलानीजी की जयंती पर आलेख। खादी शताब्दी वर्ष में 'उपेक्षा की शिकार खादी' आलेख पढ़कर मन में दुःख हुआ कि क्यों हम सरकार के भरोसे हैं।

नवगठित राजस्थान प्रदेश सर्वोदय मंडल की गतिविधियों के बारे में पढ़ा, बहुत खुशी हुई एवं आशा है कि गांधीजी के स्वप्नानुसार प्रत्येक गांव में सर्वोदय ग्राम मंडलों की स्थापना हो, लोकसेवकों का निर्माण हो एवं गांधीजनों की भागीदारी बढ़े।

'सर्वोदय जगत' एक ऐसी विचार-शक्ति है, जिसमें आज की युवा शक्ति के उस सोये हुए विश्वास को जगा सकती है, जिसकी आज जरूरत है।

जोधपुर स्थित 'गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र' के वाचनालय में पहली बार 'सर्वोदय जगत' के कई अंक पढ़े। ऐसा लगा कि मानो साक्षात् महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण को सुन रहा हूं।

–अशोक चौधरी, जोधपुर
मो. 9587514149

30 जनवरी : गांधी-निर्वाण दिवस पर नमन

गांधीजी की साधना

❑ रंगराव दिवाकर

गांधी प्रेम से द्वेष पर, भलाई से बुराई पर, सत्य से असत्य पर, अहिंसा से हिंसा पर विजय पाने की अदम्य और अडिग निष्ठा के प्रतीक हैं। जो लोग इसके विपरीत सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं, उनसे वे पूछते थे–क्या तुम अंधेरे को अधिक अंधेरे से जीत सकते हो? असत्य को अधिक असत्य से परास्त कर सकते हो? गंदगी को अधिक गंदगी से हटा सकते हो? हिंसा को अधिक हिंसा से पराभूत कर सकते हो?

कहा जाता है कि 2 अक्टूबर गांधीजी की जयंती का दिन है, और 30 जनवरी उनकी पुण्यतिथि। लेकिन क्या हमारे हृदय में निवास करने वाला गांधी दरअसल मर गया है? क्या वह मामूली अर्थ में कभी पैदा हुआ था? हमको अपने आपसे यह सवाल पूछना चाहिए। यह सत्य ही कहा गया है कि आत्मा के न जन्म है, न मृत्यु। वह अज है, अमर है। जिस विभूति को हम गांधी कहते हैं, उसका भी केवल शरीर ही पैदा हुआ था और मृत्यु भी शरीर की ही हुई है। गांधी की आत्मा निरंतर जीवित है। वह अज थी और इसीलिए अमर भी।

नैतिक विभूति : मैं समझता हूं कि मानवीय व्यवहार में गांधी एक अद्‌भुत घटना थे। ज्यों-ज्यों हम उसके विषय में अधिक विचार करते हैं, त्यों-त्यों इस सत्य की वास्तविकता हम पर प्रकट होती है। वे हमको बिलकुल हमारे जैसे मालूम होते थे और फिर भी हमसे कहीं भिन्न थे। वे इतने मानवीय थे कि हमें अपने अनोखेपन का अनुभव नहीं होने देते थे। फिर भी हममें और उनमें बहुत बड़ा भेद था, क्योंकि वे संपूर्ण रूप से खालिस नैतिक मूल्यों को मानते थे। इसी कारण सी. ई. एम. जोड़ ने उन्हें नैतिक विभूति कहा।

उपलक्षणात्मक मृत्यु : यदि हम थोड़ी-सी अलग भाषा का प्रयोग करें तो यह कह सकते हैं कि गांधी का जन्म तो वास्तविक था परंतु उनकी मृत्यु केवल उपलक्षणात्मक थी। 30 जनवरी के दिन जो शोकपूर्ण घटना घटी उसका परिणाम आखिर क्या हुआ? गांधी की आत्मा अपने नश्वर कलेवर में से उन्मुक्त होकर अव्यक्त रूप में आत्म-जगत में विलीन हो गयी। इस भौतिक जगत के लिए वे मृत हो गये। लेकिन उनका आध्यात्मिक जगत में पुनर्जन्म हुआ, जहां वे अनंत काल तक रहेंगे।

अडिग निष्ठा के प्रतीक : मृत्यु से बहुत पहले ही गांधीजी एक व्यक्ति नहीं रह गये थे। वे एक संस्था बन गये थे। एक विचार बन गये थे। नैतिक परिपूर्णता का एक प्रतीक बन गये थे। गांधी मानव जाति की अंतरात्मा का प्रतीक है। मनुष्य के हृदय में नित्य चलने वाले भले और बुरे के संघर्ष की तथा बुराई के खिलाफ निरंतर युद्ध करने की प्रवृत्ति की याद दिलाने वाला तत्त्व नहीं, तो गांधी और है क्या? उनका आदेश था कि तुमको प्रतिकार करना ही चाहिए! प्रतिकार अहिंसा से करो, क्योंकि वही सबसे उत्कृष्ट और श्रेष्ठ प्रतिकार है। लेकिन इसमें यदि तुम अपने आपको असमर्थ पाओ तो भी प्रतिकार करो; चाहे हिंसा से ही क्यों न हो, क्योंकि अहिंसा हिंसा से जितनी श्रेष्ठ है, उतनी ही हिंसा कायरता से श्रेष्ठ है। गांधी प्रेम से द्वेष पर, भलाई से बुराई पर, सत्य से असत्य पर, अहिंसा से हिंसा पर विजय पाने की अदम्य और अडिग निष्ठा के प्रतीक हैं। जो लोग इसके विपरीत सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं, उनसे वे पूछते थे—क्या तुम अंधेरे को अधिक अंधेरे से जीत सकते हो? असत्य को अधिक असत्य से परास्त कर सकते हो? गंदगी को अधिक गंदगी से हटा सकते हो? हिंसा को अधिक हिंसा से पराभूत कर सकते हो?

अनन्य अहिंसा प्रेम : यह सच है कि उनकी साधना सत्य की निरंतर खोज की थी। लेकिन वे सत्य को अहिंसा के द्वारा पाना चाहते थे। यह कहना बहुत गलत न होगा कि उन्हें सत्य से प्रेम था, परंतु सत्य की अपेक्षा अहिंसा से अधिक प्रेम था। सत्य अगर हिंसा के लिबास में आता तो वे उसका स्वीकार नहीं करते। उन्हें हर प्रकार की और किसी भी रूप में हिंसा से घृणा थी। वे और सब बातों से समझौता कर सकते थे लेकिन हिंसा से हरगिज नहीं। उनके लिए किसी भी प्रवृत्ति में हिंसा का प्रकट होना असह्य था। वे उसे पाप की जड़ समझते थे। या यों कह लीजिए कि सारी आसुरी शक्तियां हिंसा के द्वारा ही काम करती हैं। उनकी दृष्टि में सारा शोषण हिंसा पर आधार रखता है और न्याय स्वाभाविक रूप से अहिंसा में से परिणत होता है।

अखंड और अविभाज्य जीवन : मानव जाति के मार्गदर्शन करने वाले सभी धर्मों के सिद्धांतों के लिए आदर रखते हुए भी यह कहा जा सकता है कि उन सबकी अपेक्षा गांधीजी के सिद्धांत वास्तव में अधिक मानवीय थे। उनकी सिखावन का वर्णन एक वाक्यार्ध में उपयुक्त रूप से इस प्रकार किया जा सकता है—एक कदम आगे! उनके जीवन-कार्य की अनन्य विशेषता कृति और आचरण के आग्रह में थी। मूसा ने कहा : बुराई न कर, और

ईसा ने कहा : बुराई का प्रतिकार मत कर। गांधी ने इससे आगे बढ़कर कहा : बुराई को भलाई से जीत। बुद्ध के अनुशासन में सब्ब पापस्सअकरणम्। कुसलस्स उपसंपदा। स चित्तपरियोदपनं। (पाप न करना, पुण्य करना और अपने चित्त का निरंतर शोधन करना), इन तीन बातों का समावेश होता है। लेकिन बुद्ध की वर्ग-परंपरा में क्षत्रियों का स्थान था। परंतु योद्धा के लिए भी गांधी का पहला और अंतिम आदेश 'बुराई का प्रतिकार भलाई से करें ही' है। बुराई मानवीय व्यवहार के किसी भी क्षेत्र में, किसी भी अवसर पर क्यों न दिखाई दे, उसका मुकाबला अवश्य करना है। गांधी के लिए जीवन अखंड और अविभाज्य था। उसके धर्म और राजनीति जैसे अलग-अलग खंड नहीं थे। वे विश्वकुटुम्ब या वसुधैव कुटुम्बकम् के पुरातन सिद्धांत की पुनःस्थापना करना चाहते थे। सारा विश्व एक परिवार है; सारे मानव एक-दूसरे के कुटुम्बीय हैं। वे कहते थे, प्रेम से ही जगत का जन्म होता है। वह प्रेम में और प्रेम के लिए जीता है और संघर्ष के अवसर पर एकमात्र प्रेम के अस्त्र से युद्ध करता है।

सत्ता के दो पहलू : हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले बहुत से दूसरे दार्शनिकों और सम्प्रदायों से मैं परिचित हूं। उनके लिए, और जीवन के कुछ क्षेत्रों में उन्होंने जो कुछ हमको दिया है उसके लिए, मेरे मन में आदर है। लेकिन मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि उनके दर्शन में समग्रता नहीं है और वे हमको हमारे मुख्य आदर्श से दूर ले जाकर हमारी दिशा भूल सकते हैं। भौतिकवाद हमारे निरंतर साथ है और जब उसको एक प्रतिष्ठित तत्त्वज्ञान का रूप दिया जाता है तथा उसका प्रतिपादन दुर्धर्ष तर्क-पद्धति से किया जाता है तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यही अंतिम ज्ञान है। लेकिन यह विज्ञान उतना ही एकांगी है, जितना कि मायावादी अध्यात्म, जो कहता है कि सिर्फ आत्मा सत्य है और बाकी सब मृगजल और माया है। विशुद्ध भौतिकवाद के अनुसार यह संसार एक उद्देश्यहीन और अंध-चक्र है—जो निरंतर घूमता रहता है और आत्मा या चैतन्य जड़ द्रव्य का ही एक रूप है। विशुद्ध अध्यात्मवाद के अनुसार जड़ पदार्थ का अस्तित्व ही नहीं है। वास्तव में जड़ और चेतन ये दो भिन्न पदार्थ नहीं हैं। वे सत्ता या सत् तत्त्व के दो पहलू हैं। उन दोनों का संबंध अविभाज्य है। वे दोनों एक-दूसरे में ओतप्रोत हैं। उन्हीं के कारण यह विश्व निरंतर अभिव्यक्त होता है। यह विश्व हमेशा था, है, और किसी न किसी रूप में रहेगा। हम कभी भाव के अभाव की कल्पना नहीं कर सकते।

क्रियात्मक चिन्तन की कला : परंतु जो केवल भौतिक या केवल आध्यात्मिक विज्ञान में निरत हैं, वे अंधमूतमः प्रविशन्ति—इन दोनों का ज्ञान और अनुभव तथा उनके अन्योन्य संबंध का विज्ञान ही हमको उबार सकता है। यदि एक का परिणाम निर्बुद्ध और अंतहीन क्रिया में होता है, तो दूसरे का परिणाम निरुद्देश्य चिन्तन में होता है। एक सत्य के चिन्तन से वंचित होकर भौतिक जगत के व्यवहार में खो जाता है और दूसरा इस वास्तविक जगत से मुंह मोड़कर चिन्तन की गंधर्व नगरी में संचार करता रहता है। हमें इस एकांगी दृष्टि का त्याग करना चाहिए और अपने समग्र जीवन की तथा अस्तित्व की सभी घटनाओं में सामंजस्य तथा अन्योन्य संबंध देखना चाहिए। हमें चिन्तनात्मक कर्म और क्रियात्मक चिन्तन—जो कि वास्तविक जीवन की परिभाषा है—की कला सीखनी चाहिए। यही अनासक्त और निष्काम कर्म का सार सर्वस्व है।

प्रेरक शक्ति : गांधीजी ने अपने साधनात्मक जीवन में यदि कुछ किया, तो यह कि इस पाठ का पहले अभ्यास किया और बाद में उपदेश। वह प्रकाश की उस शिखा के समान थे, जो इस अंधकारमय संसार को पार करके निकल गयी और अपने पीछे प्रकाश की एक ऐसी रेखा छोड़ गयी जैसी कि इस भूमि पर या सात समुद्रों पर पहले कभी प्रकट नहीं हुई थी। आसुरी शक्तियों के अन्य संघर्षों के कारण संसार में घोर निराशा छा रही थी। उसको चीरने वाली आशा की किरण का नाम गांधी था। असत्य और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में वे निर्भयता की प्रतिमा थे। सभी न्याययुक्त संघर्षों की वे आत्मा थे। अपने पशुत्व पर विजय पाने की चेष्टा करने वाले मानव की वे प्रेरक शक्ति थे।

नीर-क्षीर : हम क्षुद्र, मर्त्य जीव हैं। हम पार्थिव हैं, मिट्टी के बने हैं। लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि हमारे भीतर नैतिक शक्ति की विद्युत की चिनगारी है। यदि हम इस चिनगारी को भूल जायेंगे तो आसुरी शक्तियों के अधीन होंगे। लेकिन इस अनंत प्रकाश की आभा का यदि हमें नित्य जागृत भान रहेगा तो हम निरंतर पुनर्जन्म लेंगे और अमर होंगे। हमें चुनने की स्वतंत्रता है। हम चाहें तो मनुष्य बन सकते हैं या पशु बन सकते हैं। देव बन सकते हैं या दानव बन सकते हैं। हमको निर्णय करना है कि हम इस संसार को, परमात्मा की इस महान देन को स्वर्ग में परिणत करेंगे या नरक में? ❑

आवश्यक सूचना

'सर्वोदय जगत'

के सभी सुहृद पाठकों, ग्राहकों, लेखकों व शुभ-चिन्तकों को सूचित करना है कि सर्व सेवा संघ-प्रकाशन की वेबसाइट

www.sssprakashan.com

पर 'सर्वोदय जगत' का प्रत्येक अंक उपलब्ध कराया जा रहा है।

कृपया वेबसाइट देखें।

मत-सम्मत

आर.एस.एस. : नौ दशक का लंबा सफर

❑ रमेश ओझा

आर.एस.एस. ने शुरू से ही गांधी-विचार के सामने वैकल्पिक विचार रखने की असफल कोशिश की। यदि वे ईमानदारीपूर्वक अपने विचार रखते तो हिटलर या मुसोलिनी के पंथ वाले ही घोषित हो जाते। क्योंकि दूसरे विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि और जात-पात में बिखरा हिन्दू समाज सामने था। ऐसे में बिखरे हुए हिन्दू समाज को एकत्रित करना प्रचंड चुनौती थी। अतएव हिटलरकालीन जर्मनी या सल्फी मुसलमानों जैसा रेडिकल बनाना, तो बहुत ही दूर की बात थी।

पिछले दिनों राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने केन्द्रीय मंत्रियों और प्रधानमंत्री को भी अपने दरबार में खड़ा कर उनसे साल भर के काम का हिसाब लिया। कुछ सलाह व चेतावनियां दीं तो कुछ बातों में सहयोग करने का विश्वास भी दिया। इसमें नया कुछ भी नहीं है। गौरतलब है जो लोग जनता के बीच एजेंडा लेकर गये ही नहीं, ऐसे लोग आज पिछले दरवाजे से देश पर राज कर रहे हैं। यानी सरकार तो मात्र मुखौटा है।

जब बाईस दलों को मिलाकर अटल बिहारी सरकार सत्ता में आयी थी, तब अमेरिका तथा यूरोपीय देशों के राजदूत, भाजपा के तत्कालीन प्रवक्ता, विचारक एवं रणनीतिकार गोविन्दाचार्य से मिलने गये। वे समझना चाहते थे कि भारत की दक्षिणपंथी विचारों की हिन्दू राष्ट्रवादी सरकार कैसी होगी? धर्म के नाम पर भेदभाव न करते हुए क्या सभी को साथ लेकर चलेगी? मोदी जैसा आम कहते हैं उसी भाषा में, पर अपने लहजे में अटल बिहार वाजपेयी भी कहते थे— सबका साथ, सबका विकास। परंतु गोविन्दाचार्य इन राजदूतों से बोले, 'देखिए! सरकार तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की है। अटल बिहार वाजपेयी तो मात्र मोहरा हैं। एजेंडा संघ का ही होगा। अभी भाजपा के पास संपूर्ण बहुमत नहीं है इसलिए उदार मतवादी माने जाने वाले वाजपेयीजी को मुखौटा बनाकर पेश किया गया है।'

ये शब्द एक समय संघ के प्रिय रहे गोविन्दाचार्य के हैं। भेंट के दौरान एक राजदूत ने इसे टेप कर किया था, जो बाद में बाहर आया। उनके द्वारा कही यह बात जब बाहर आयी तो वाजपेयी सकते में आ गये और गोविन्दाचार्य को राजनीतिक संन्यास दे दिया गया। संघ को तब मोहरा चाहिए था और वाजपेयीजी इस बात को समझते थे। गौरतलब है कि जब बात राम जन्मभूमि आंदोलन और बाबरी मस्जिद टूटने के बाद दंगों के विद्रूप हुए चेहरे को छिपाने के लिए हो तो वाजपेयी जैसी उदारमतवादी की आवश्यकता थी। हकीकत यह है कि जब तक संघ के असली चेहरे को बहुसंख्य भारतीय हिन्दू नहीं स्वीकारता, तब तक उसे ऐसे मोहरों, मुखौटों और गठबंधनों की जरूरत रहेगी।

अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और गोविन्दाचार्य के जन्म के पूर्व सन् 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई, गत दशहरे में इसको नब्बे साल पूरे हुए। संघ की स्थापना ही गांधी की कल्पना के भारत को नकारने के लिए हुई थी। गांधी की कल्पना के भारत में सभी प्रकार के भेदभाव किनारे कर, आधुनिक, लोकतांत्रिक व समता आधारित भारत निर्माण करना था। इसे ही आजकल 'आयडिया ऑफ इंडिया' कहा जाता है। गांधीजी ने हिन्दुस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में नेहरू का चयन किया। जिन्हें इस पर संभवतः गांधीजी से अधिक विश्वास था। हिन्दुस्तान का संविधान बनाने वालों ने भी गांधी के 'आयडिया ऑफ इंडिया' को स्वीकृति दी। जहवाहरलाल नेहरू ने सत्रह वर्षों के अपने कार्यकाल में इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक जनतांत्रिक संस्थाएं, परम्पराएं कायम की। वैसे हमें संघ नेताओं और कार्यकर्ताओं की सहनशक्ति की कदर करनी चाहिए। संघ के नौ दशक की यात्रा में प्रारम्भिक छः दशक तो अत्यन्त विपरीत काल रहा है। परंतु तमाम बातों के अलावा उन्हें सम्पूर्ण विश्व जिस व्यक्ति को धीरे-धीरे स्वीकारते गया था, उस गांधी को उसी की भूमि में, उसी की सहधर्मी जनता के बीच अस्वीकृत कराना था।

उस दौरान संघ के समक्ष दो विकल्प थे। एक, गांधी के विचार को वैचारिक विकल्प देना और दूसरा मोहरे, संगठन बनाकर जनता में भ्रम फैलाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना। पहला विकल्प अधिक प्रामाणिकता की मांग करता था। पहला अधिक चिरंतन तो दूसरे में समयानुसार रंग बदलने की छूट थी। आर.एस.एस. ने शुरू से ही गांधी-विचार के सामने वैकल्पिक विचार रखने की असफल कोशिश की। यदि वे ईमानदारीपूर्वक अपने विचार रखते तो हिटलर या मुसोलिनी के पंथ वाले ही घोषित हो जाते। क्योंकि दूसरे विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि और जात-पात में बिखरा हिन्दू समाज सामने था। ऐसे में बिखरे हुए हिन्दू समाज को एकत्रित करना प्रचंड चुनौती थी। अतएव हिटलरकालीन जर्मनी या सल्फी मुसलमानों जैसा रेडिकल बनाना, तो बहुत ही दूर की बात थी। यदि वह नरमपंथी विचारधारा रखते तो गांधी के करीबी होने का डर था। ऐसे में लोग कहते कि ये तो गांधीजी का ही विचार कहना है तो गांधी का विरोध क्यों? लोग कहते हिन्दुओं को एकत्र करने का तत्त्वज्ञान बताने के लिए यदि आप सर्व समावेशकता और उदारमतवाद को

स्वीकार करते हैं तो फिर अन्य धर्मावलम्बियों को नीचा क्यों दिखाते हो? महान आदर्श विचार केवल चुनिन्दा लोगों के लिए नहीं होते।

परंतु इस कूट प्रश्न का वैचारिक उपाय संघ को नब्बे वर्ष बाद भी नहीं मिला है। परंतु तीन बातें निश्चित थीं। एक, उन्हें गांधी का सर्व समावेशकता का सिद्धांत मान्य नहीं। दूसरी, भारत हिन्दू राष्ट्र होना चाहिए। तीसरी, उनके लिए भारत के हिन्दुओं को संगठित करना। यदि वैकल्पिक विचार रखने की बात करते तो ये तीनों बातें एक ही साथ साध्य हो सकती थीं। पर यह नहीं हो पाया। इसीलिए संघ ने हिन्दुओं को संगठित करने पर लक्ष्य केन्द्रित किया। सहजता से लोगों के गले उतरे, ऐसी निश्चित ध्येय की ओर ले जाने वाली विचारधारा का पथ उनके पास नहीं था। ऐसी स्थिति में हिन्दुओं को संगठित करने का भगीरथ कार्य भी आवश्यक ही था, इसीलिए संघ को चेहरे, मोहरे और अनेक मुंह से बोलने की नकल करनी पड़ रही है। इस सब के बीच; संघ यह बात भूल रहा है कि विचारों का विकल्प सिर्फ विचार ही होता है। मोहरे, संगठन और अनेक मुंह से बोलकर सत्ता की प्राप्ति हो भी जाय तो समाज को (हिन्दू) बदलने का काम तो विचारों से ही होगा।

कार्ल मार्क्स के विचारों से समाज में परिवर्तन हुआ। कोई भी संगठन कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, पर वह विचारों की जगह नहीं ले सकता। संगठन पत्थर-ईटों से बने धर्मस्थल तोड़ सकता है, पर आदमी को बदलना उसके बस का नहीं। वह काम तो विचार ही कर सकता है। यहीं पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सीमाएं सामने आती हैं।

वह पिछले नौ दशकों से जिस हिन्दू राष्ट्र का जप कर रहा है, वह निश्चित तौर पर कैसा होगा, यह स्पष्ट बताने वाला एक भी दस्तावेज उनके पास उपलब्ध नहीं। नब्बे वर्ष कोई छोटा समय नहीं होता। संघ के किसी भी कार्यालय में हिन्दू राष्ट्र के तत्त्वज्ञान पर एक भी किताब उपलब्ध नहीं है। पिछले नब्बे साल में संघ का एक भी खुला अधिवेशन नहीं हुआ, जिसमें स्वयं सेवक को अपने विचार रखने का मौका मिला हो और हिन्दू राष्ट्र पर मुक्त चर्चा कर, उसकी योजना विकसित की गयी हो। संघ के स्वयं सेवक दशहरे के दिन पथ संचलन करते हैं, संघ प्रतिनिधि का भाषण सुनकर, गुरुदक्षिणा अर्पण कर घर लौट आते हैं। इस बौद्धिक दारिद्र्य का परिणाम हमारे सामने है।

केन्द्र सरकार द्वारा की गयी शैक्षणिक नियुक्तियों पर नजर डालिये। अभिनय के क्षेत्र में किसी भी प्रकार की सिद्धी से विहीन गजेन्द्र सिंह चौहान को फिल एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट का अध्यक्ष बनाया गया। जीवन में एक भी रिसर्च पेपर (किताब नहीं, पेपर) न लिखने वाले, वाय.एस. राव इंडियन कौन्सिल ऑफ हिस्टोरीकल रिसर्च के अध्यक्ष बनाये गये। यकीन न हो तो कौंसिल की अधिकृत वेबसाइट पर अध्यक्ष महाशय का जीवन परिचय देख लीजिए। इसमें चार पुस्तिकाओं में चार पंक्ति लिखने का दावा भी उन्होंने नहीं किया। इनसे अधिक तेजस्वी और बुद्धिमान लोग संघ के पास नहीं हैं। मुम्बई विद्यापीठ के कुलगुरु होने की पात्रता इतनी ही है कि आपने संघ के डाटा सेंटर में काम किया है। यही स्थिति गुजरात विश्वविद्यालय की भी है। इस दरिद्रता का कारण उपासना का अभाव है। ❑

मनुष्य का स्वभाव

❑ दादा धर्माधिकारी

मनुष्य का स्वभाव क्या है?

जो नित्य होता है, निरपवाद होता है, वह स्वभाव होता है। सूर्य का स्वभाव प्रकाश है। अग्नि का स्वभाव उष्णता है। उष्णता से निवृत्त होते ही अग्नि नष्ट होती है। प्रकाश का निराकरण होते ही सूर्य नष्ट होता है। 'स्वभाव' ऐसी चीज है, जिसका निराकरण नहीं हो सकता। 'मनुष्य-स्वभाव' क्या है?

सभी जानते हैं कि संज्ञा के साथ जब विशेषण जोड़ दिया जाता है, तब उसका अर्थ मर्यादित हो जाता है। 'स्वभाव' यानी पत्थर, वनस्पति आदि से मनुष्य तक सारी जड़-चेतन चीजों का स्वभाव। 'प्राणि-स्वभाव' यानी पशु-पक्षी, मनुष्यादि का स्वभाव। 'मनुष्य-स्वभाव' का अर्थ है—इन दूसरे प्राणियों से मनुष्य का जो विशेष स्वभाव है वह—जो उसका विशेष लक्षण है, उसकी विशेषता है, वह। असाधारणो धर्मो लक्षणम्। उसे मनुष्य का पृथक् लक्षण कहते हैं। स्वभाव अनिराकरणीय है। उसका हम निराकरण नहीं करना चाहते। प्रश्न है कि हम हिंसा का निराकरण चाहते हैं या नहीं? द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहता है कि ''संघर्ष मनुष्य का स्वभाव है। यदि मनुष्य-स्वभाव में संघर्ष है, इतिहास भी वर्ग-संघर्ष की ही कहानी है, तो सवाल यह है कि फिर आप संघर्ष का निराकरण क्यों करना चाहते हैं?''

जो स्वभाव है, उसके बारे में कुतूहल नहीं होता। मान लीजिए कि कोई अखबार छापता है कि अहमदाबाद में आज एक भी चोरी नहीं हुई। तो लोग कहेंगे कि चोरी नहीं हुई, तो अखबार ही क्यों छापता है? चोरी हुई, तो वह खबर हो सकती है। चोरी नहीं हुई, तो क्या खबर हुई? यदि युद्ध मनुष्य का स्वभाव होता, तो युद्ध की वार्ता में कोई रम्यता न होती। पनघट पर स्त्रियां लड़ें तो सब देखने के लिए जाते हैं। नारायण और हम लड़ते नहीं, किसी को कुतूहल नहीं होता। लड़ते हैं, तो लोग दौड़ आते हैं और झगड़ा मिटाने की चेष्टा करते हैं। कहते हैं, झगड़ा मिटाने के लिए ही है। अब जो मिटाने की वस्तु है, उसी को कोई स्वभाव कहे, तो फिर हम उसे क्या कहें! मनुष्य संघर्ष को मिटा देना चाहता है, इसलिए संघर्ष मनुष्य का स्वभाव नहीं है। संघर्ष यदि मानव-इतिहास है, तो वह मनुष्य के स्वभाव का इतिहास नहीं है, बल्कि उसके दोषों का इतिहास है, स्वभाव की प्रतिकूलताओं का इतिहास है। ❑

लोकज्ञान-लोकविद्या

शोध से ज्यादा श्रद्धा की जरूरत

❑ अनुपम मिश्र

बहुत कम लोगों को पता होगा कि भारत ही नहीं एशिया का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज कहां बना था? आप जानते हैं वह कब और क्यों बना?

यह जानना इसलिए भी जरूरी है कि आज तकनीकि का जो हमारा थोड़ा पढ़ा-लिखा समाज है, उसकी नींव में हमारे वे अनपढ़ लोग रहे हैं, जिनको हमने दुत्कार कर अलग कर दिया। लेकिन शायद ही इसके बारे में किसी को पता हो। मुझे चार-पांच आईआईटी में जाने का मौका मिला है। मैंने वहां के फैकल्टी से भी यह जानने की कोशिश की कि क्या उन्हें पता है कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई कहां से शुरू होती है। आप उन्हें दोष न दें, लेकिन उनको भी नहीं पता। आज हम मानते हैं कि जितने सुविधा सम्पन्न शहर में रहेंगे, उतनी अच्छी पढ़ाई होगी। लेकिन देश का पहला इंजीनियरिंग संस्थान कोई दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता या मद्रास में नहीं बना, और जब बना तो उसमें प्रवेश के लिए कोई कैट टेस्ट भी नहीं होता था। जिसने बनाया वह भी देश में कोई उच्च शिक्षा का काम करने नहीं आये थे। ईस्ट इंडिया कंपनी वाले साफ-साफ व्यापार करने आये थे या शुद्ध हिन्दी में कहें तो लूटने के लिए आये थे। इसलिए उनको उच्च शिक्षा का कोई केन्द्र खोलने की जरूरत नहीं थी।

लेकिन 1847 में उसने हरिद्वार के पास रूढ़की नामक एक छोटे से गांव में पहला इंजीनियरिंग कॉलेज खोला था। उस समय शायद रूढ़की गांव की आबादी 700-750 रही होगी। वह हमारे देश का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज था। और उसे बनाने का एकमात्र कारण था लोकज्ञान का उपयोग। जिस लोकबुद्धि को हम भूल चुके हैं, और अनपढ़ गंवार समझ बैठे हैं, रूढ़की इंजीनियरिंग कॉलेज बनाने में उन्हीं लोगों की प्रेरणा थी। प्रसंग यह था कि अकाल चल रहा था। लोग मर रहे थे। लोग मरें इससे ईस्ट इंडिया कंपनी को कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन एक सहृदय अंग्रेज अधिकारी ने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक डिस्पैच भेजकर कहा कि जो लोग मर रहे हैं, उनमें तो आप लोगों को कोई दिलचस्पी नहीं होगी लेकिन यहां आप एक नहर बनायेंगे तो आपको सिंचाई का कर मिलना शुरू हो जायेगा और अकाल से लोग निपट लेंगे। लेकिन मुश्किल यह थी कि उस समय कोई पीडब्ल्यूडी नहीं था। पब्लिक वर्क की ऐसी अवधारणा उस समय नहीं थी, इसलिए कोई विभाग भी नहीं था।

अंग्रेज महोदय ने स्थानीय लोगों को इकट्ठा किया। उनसे पूछा कि तुम लोग पानी का बहुत अच्छा काम जानते हो तो क्या नहर बना सकते हो? तो लोगों ने कहा कि हां बना सकते हैं। 200 किलोमीटर लंबी नहर बनानी थी लेकिन दो टुकड़े कागज भी नहीं प्रयोग किया। बिना ड्राईंग बोर्ड और बिना किसी यंत्र के उन्होंने यह नहर बनायी। मन पर उकेरा और जमीन पर नहर उभरती चली गयी। उसमें बीच में नहर को एक नदी पार करानी थी, जिसमें नदी से ज्यादा पानी गंगा का निकाल कर ले जाना था। आज हम अंग्रेजी में इसे अक्वाडक कहते हैं। वह भी उन लोगों ने ही डिजाईन किया था।

इन देहाती और गंवार लोगों ने चूरे गारे की मदद से 200 किलोमीटर की नहर बनायी। आज इस नहर को 200 साल हो गये लेकिन अभी भी यह नहर बराबर चलती है। लेकिन अंग्रेज अधिकारी ने ऐसा काम देखा तो फिर से उसने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक पत्र लिखा। उसने सुझाव दिया कि ऐसे गुणीजन लोगों के बच्चों को पढ़ाने-चमकाने के लिए एक छोटा-सा इंजीनियरिंग कॉलेज यहां होना चाहिए। यह इन अनपढ़ लोगों की देन थी या उनका ये चमत्कार था कि अंग्रेज अधिकारी जो लूटने आया था, उसको एक इंजीनियरिंग कॉलेज खोलकर देना पड़ा। जिन देशों को आज हम तरक्की का सूरमा मानते हैं, उन जापान और कोरिया में भी तब तक कोई इंजीनियरिंग कालेज नहीं बना था। तब हमारे यहां इंजीनियरिंग कालेज खुला जो कि अनपढ़ लोगों की देन थी।

लेकिन दस साल बाद ही गदर शुरू हो गया। 1847 के बाद 57, जो उदार गिने-चुने अधिकारी इस तरह के प्रयोगों को बढ़ावा दे रहे थे कि यहां के जो लोग अनपढ़ माने जाते हैं वे बाकायदा इंजीनियर हैं और उससे ये देश चलना चाहिए, गदर से वह धारा एकदम से कट गयी। सबको ब्लैक लिस्ट किया गया और साफ-साफ कहा गया कि जो ईस्ट इंडिया कंपनी के वफादार हैं, उन्हें ये सब पढ़ाई पढ़नी चाहिए। उनको और कोई चीज आती हो तो आये, हमारे लिए वे अनपढ़ हैं। इस तरह से वह रस्सी तब कटी लेकिन फिर कभी वह रस्सी हम जोड़ नहीं पाये।

30-35 साल में काम करते हुए मैंने यह सब शोध के नजरिये से नहीं देखा। इसको मैंने श्रद्धा से देखा। शोध में तो पांच साल का प्रोजेक्ट होगा। मुझे मंत्रालय से पैसा मिलेगा तो करूंगा, नहीं मिलेगा तो नहीं करूंगा। लेकिन अगर हम श्रद्धा रखेंगे तो हम उस काम को सब तरह की रुकावटों के बाद भी करके आगे जायेंगे। इसके लिए विशेषज्ञ बनना जरूरी नहीं। हमें समाज का मुंशी बनना होगा। समाज के अच्छे काम को मुंशी की तरह लोगों के सामने रखना होगा। तब शायद हमारी यह चिन्ता थोड़ी कम हो सके कि जिस समाज को हम पिछड़ा और अनपढ़ कहते हैं उनको साक्षर करने की जरूरत नहीं है बल्कि उनसे बहुत कुछ सीखने की जरूरत है। ❑

वैश्विक परिदृश्य

अमीरों के हितों में पिसते गरीब

❑ रमन त्यागी

गर्मी-सर्दी का बिगड़ता स्वरूप, रोज-रोज आते समुद्री तूफान, किलोमीटर की दूरी तक पीछे खिसक चुके ग्लेशियर आदि, ये सब कुछ एक शुरुआत है। जिन कारणों से जलवायु में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं, उनके सुधार की दृष्टि से अगर दुनिया के तथाकथित विकसित देशों द्वारा अपने रवैये में बदलाव नहीं लाया गया तो पृथ्वी पर तबाही तय है। इस तबाही को कुछ हद तक सभी देश महसूस भी करने लगे हैं।

पेरिस के जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में दो सप्ताह गहन मंथन हुआ। हाथ क्या लगा, शायद ही किसी को समझ में आया हो। ऐसे सम्मेलनों का आयोजन गरीब व विकासशील देशों के लिए अमीर व विकसित देशों द्वारा लॉलीपोप देने के लिए किया जाता है। पेरिस सम्मेलन में भी यही हुआ।

अमीरों ने सीनाजोरी करते हुए तय कर दिया है कि हम चोरी भी करेंगे और सीनाजोरी भी। जलवायु परिवर्तन के इस सम्मेलन को पिछली कुछ बैठकों के आइने में देखना बहुत जरूरी है। इससे यह समझने में कतई परेशानी नहीं होगी कि अमीर देश आखिर चाहते क्या हैं?

जब संयुक्त राष्ट्र के महासचिव पद पर बान की मून आसीन हुए, तो उन्होंने अपने पहले ही संबोधन में दुनिया को आगाह कर दिया था कि जलवायु परिवर्तन भविष्य में युद्ध और संघर्ष की बड़ी वजह बन सकता है। बाद में जब संयुक्त राष्ट्र द्वारा ग्लोबल वार्मिंग के संबंध में अपनी रिपोर्ट पेश की गयी तो उससे इसकी पुष्टि भी हो गयी थी।

हालांकि संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान भी ग्लोबल वार्मिंग पर अपने दस वर्षों के कार्यकाल में चिन्ता जताते रहे। इससे भी एक कदम आगे दुनिया भर के पर्यावरण विशेषज्ञ पिछले दो दशकों से चीख-चीख कर कह रहे हैं कि अगर पृथ्वी व इस पर मौजूद प्राणियों के जीवन को बचाना है तो ग्लोबल वार्मिंग को रोकना होगा।

विश्व मेट्रोलॉजिकल ऑर्गेनाइजेशन व यूनाइटेड नेशन्स के पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा वर्ष 1988 में गठित की गयी समिति इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज के पूर्व अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र कुमार पचौरी व अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर को नोबल समिति वर्ष 2007 में शांति का नोबल पुरस्कार दिया गया, तो विषय की गंभीरता इससे साफ झलक गयी थी।

यह साफ जाहिर है कि क्लाइमेट चेंज को लेकर पेरिस सम्मेलन में विश्व बिरादरी ने जो मंथन किया, उससे विष और अमृत दोनों निकले। यह बात अलग है कि विष गरीबों के हिस्से आया और अमृत अमीरों की प्याली में चला गया। यह भी पहले से साफ नजर आ रहा था कि अमीर देश विष ग्रहण शायद ही करें और गरीब देशों को अमृत का घूंट शायद ही मिल पाये। ऐसे में जब दुनिया अमीरों की बढ़ती विलासिता के आगे गरीबों को मरने पर मजबूर करेगी, तो संभव है कि झगड़े बढ़ेंगे ही।

बान की मून ने अपने पहले संबोधन में दुनिया पर दादागिरी चलाने वाले अमेरिका से भी आग्रह किया था कि वह ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को कम करने के लिए संपूर्ण विश्व की अगुवाई करे। लेकिन अमेरिका क्योटो संधि तक पर सहमत नहीं हुआ, जबकि दुनिया में कुल उत्सर्जित होने वाली ग्रीनहाउस गैसों का एक चौथाई अकेले अमेरिका उत्सर्जन करता है।

अमेरिका अपने व्यापारिक हितों पर तनिक भी आंच नहीं आने देना चाहता है। अमेरिका, अफ्रीका जैसे देशों से पैसे देकर उसके कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन का अधिकार खरीदना चाहता है लेकिन अपने यहां कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में कमी नहीं लाना चाहता।

सन् 1997 में क्योटो में हुए सम्मेलन में दुनिया में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के संबंध में की गयी संधि में प्रत्येक देश को सन् 2012 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में सन् 1990 के मुकाबले 5.2 प्रतिशत तक की कमी करना तय किया गया था।

इस संधि को सन् 2001 में बॉन में हुए जलवायु सम्मेलन में अंतिम रूप दिया गया था। इस संधि पर दुनिया के अधिकतर देशों द्वारा अपनी सहमति भी दी गयी थी।

गौरतलब है कि पर्यावरण विशेषज्ञ ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के स्तर पर 2 प्रतिशत करने के हक में थे। लेकिन अमेरिका जहां पर दुनिया की कुल आबादी के मात्र 4 प्रतिशत लोग ही बसते हैं, इस पर सहमत नहीं हुआ। हालांकि सन् 1997 में क्योटो संधि के दौरान बिल क्लिंटन द्वारा इस पर सहमति जतायी गयी थी, लेकिन बुश ने राष्ट्रपति बनने के पश्चात् इसको मानने से इनकार कर दिया था और अब ओबामा भी अपने हितों को सुरक्षित करते हुए कुछ बदलावों के साथ बुश की नीतियों को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

अमेरिका के अधिकतर उद्योग तेल व कोयले पर आधारित हैं, इसलिए वहां अधिक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है। ब्रिटेन के एक व्यक्ति के मुकाबले अमेरिका का प्रत्येक नागरिक दो गुनी कार्बन डाइऑक्साइड गैस का उत्सर्जन करता है।

गौरतलब है कि ब्रिटेन व भारत उत्सर्जित होने वाली ग्रीनहाउस गैसों का मात्र तीन-तीन प्रतिशत ही उत्सर्जन करते हैं। अमेरिका के इस रवैए से क्योटो संधि का भविष्य ही संकट में पड़ गया था।

लेकिन प्रारम्भ में क्योटो संधि पर

झिझकने वाले रूस के इससे जुड़ जाने के कारण दुनिया के अन्य ऐसे देशों पर दबाव बना जो कि इससे बचते रहे। इसका श्रेय रूस के राष्ट्रपति ब्लादीमिर पुतिन की दूरदर्शिता को जाता है।

उस समय अमेरिका के 138 मेयरों ने इस संधि के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयास किया था, हालांकि तमाम प्रयासों के पश्चात् भी यह संधि तब तक अधूरी ही रहेगी, जब तक कि ग्रीनहाउस समूह की 55 प्रतिशत गैसों का उत्सर्जन करने वाले सभी देश इस पर सहमत नहीं हो जाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न रिपोर्टें हमें आगाह कर रही हैं कि धरती के सपूतों सावधान, धरती गर्म हो रही है। वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों (कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन व क्लोरो फ्लोरो कार्बन आदि) की मात्रा में इजाफा हो रहा है। यही कारण है कि धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है।

ओजोन परत छलनी हो रही है, जिसके कारण सूर्य की पराबैंगनी किरणें सीधे मानव त्वचा को रौंद रही हैं। ग्लेशियर पिघल रहे हैं तथा समुद्रों का जलस्तर बढ़ रहा है। इस रिपोर्ट ने संपूर्ण विश्व को दुविधा में डाल दिया है। सब-के-सब भविष्य को लेकर चिन्तित नजर आ रहे हैं। इस विषय पर औद्योगिक देशों का रवैया अभी भी ढुलमुल ही बना हुआ है।

विश्व का जो भी बड़ा आयोजन आज हो रहा है, उसमें ग्लोबल वार्मिंग को रोकने की बात कही जा रही है। यहां तक कि आइफा भी इसके लिए आगे आया है। सार्क के सम्मेलनों में भी इस पर चर्चा की जाने लगी है।

वर्ष 2002 में काठमांडू में हुए सार्क सम्मेलन में मालदीव के राष्ट्रपति मामून अब्दुल गयूम ने अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा था कि अगर धरती का तापमान इसी तेजी से बढ़ता रहा तो मालदीव जैसे द्वीप शीघ्र ही समुद्र में समा जायेंगे। उनकी यह चिन्ता उन देशों व द्वीपों पर भी लागू होती है जो कि समुद्र के किनारों पर या उसके बीच में स्थित हैं।

वर्ष 2002 में ही जलवायु परिवर्तन पर दिल्ली में हुए एक सम्मेलन में जो घोषणा-पत्र जारी हुआ था, उसमें मौजूद 186 देशों में से अधिकतर देश इस बात पर सहमत थे कि ग्रीन हाउस गैसों में कमी लायी जानी चाहिए। लेकिन यूरोपीय संघ, कनाडा व जापान जैसे देश इससे नाखुश थे।

इस सम्मेलन में अटल बिहारी वाजपेई का यह कहना कि जो देश अधिक प्रदूषण फैलाते हैं उन्हें प्रदूषण रोकने के लिए अग्रणी भूमिका भी निभानी चाहिए, इन देशों को चुभ गया था। तथाकथित विकसित व औद्योगिक देश अपने विकास में किसी भी प्रकार का रोड़ा नहीं चाहते हैं। वे अपनी मर्जी के मालिक बने हुए हैं।

यूनाइटेड नेशंस की रिपोर्ट के अनुसार अगर ग्रीन हाउस गैसों पर रोक नहीं लगायी गयी तो वर्ष 2100 तक ग्लेशियरों के पिघलने के कारण समुद्र का तापमान 28 से 43 सेंटीमीटर तक बढ़ जाएगा। उस समय पृथ्वी के तापमान में भी करीब तीन डिग्री सेल्शियस की बढ़ोत्तरी हो चुकी होगी।

ऐसी स्थितियों में सूखे क्षेत्रों में भयंकर सूखा पड़ेगा तथा पानीदार क्षेत्रों में पानी की भरमार होगी। वर्ष 2004 में नेचर पत्रिका के माध्यम से वैज्ञानिकों का एक दल पहले ही चेतावनी दे चुका है कि जलवायु परिवर्तन से इस सदी के मध्य तक पृथ्वी से जानवरों व पौधों की करीब दस लाख प्रजातियां लुप्त हो जायेंगी तथा विकासशील देशों के अरबों लोग भी इससे प्रभावित होंगे।

रिपोर्ट के संबंध में ओस्लो स्थित सेंटर फॉर इंटरनेशनल क्लाइमेट एंड एनवायरनमेंट रिसर्च के विशेषज्ञ पॉल परटर्ड का कहना है कि आर्कटिक की बर्फ का तेजी से पिघलना ऐसे खतरे को जन्म देगा, जिससे भविष्य में निपटना मुश्किल होगा। रिपोर्ट का यह तथ्य भारत जैसे कम गुनहगार देशों को चिन्तित करने वाला है कि विकसित देशों के मुकाबले कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जित करने वाले भारत जैसे विकासशील तथा दक्षिण अफ्रीका जैसे गरीब देश इससे सर्वाधिक प्रभावित होंगे।

नोबल पुरस्कार विजेता वांगरी मथाई का यह कथन कि जो भी देश क्योटो संधि से बाहर हैं, वे अपनी अति उपभोक्तावाद की शैली को बदलना नहीं चाहते, सही है, क्योंकि वातावरण में हमारे बदलते रहन-सहन व उपभोक्तावाद के कारण ही अधिक मात्रा में ग्रीन हाउस गैसें उत्सर्जित हो रही हैं।

गर्मी-सर्दी का बिगड़ता स्वरूप, रोज-रोज आते समुद्री तूफान, किलोमीटर की दूरी तक पीछे खिसक चुके ग्लेशियर आदि, ये सब कुछ एक शुरुआत है। जिन कारणों से जलवायु में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं, उनके सुधार की दृष्टि से अगर दुनिया के तथाकथित विकसित देशों द्वारा अपने रवैये में बदलाव नहीं लाया गया तो पृथ्वी पर तबाही तय है। इस तबाही को कुछ हद तक सभी देश महसूस भी करने लगे हैं तथा भविष्य की तबाही का आईना हॉलीवुड फिल्म 'द डे आफ्टर टूमारो' के माध्यम से दुनिया को परोसा भी गया।

आज पूरी दुनिया पेरिस की ओर निगाह गड़ाए बैठी है। इसी त्रासदी को रोकने की योजना बनाने व क्योटो संधि पर विचार करने के लिए कोपेनहेगन में पुनः दुनिया के देशों के प्रतिनिधि एकत्रित हैं, यह विकासशील व गरीब देशों के लिए मौका है जब अमेरिका जैसे देशों को संगठित होकर घेरा जा सकता है।

लेकिन कहीं ऐसा न हो कि विकसित देश डरा-धमका कर व चिकनी-चुपड़ी नीतियों से अपने हित साध जाएं तथा विकासशील व गरीब देश उनका मुंह ताकते ही रह जाएं। इसीलिए अभी से दूसरों का हक छीनने वालों के खिलाफ लामबंद हो जाना चाहिए।

भारत इस सब में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लंदन में कहा था कि विश्व के सामने दो सबसे बड़े संकट हैं आतंकवाद और क्लाइमेट चेंज, और इन दोनों से लड़ने के लिए गांधी दर्शन पर्याप्त है। उनकी यह बात सौ फीसदी सच है। भारत के पास एक दर्शन है, इसीलिए भारत को इसकी अगुवाई करनी ही चाहिए। ❑

मत-सम्मत

बाजार में बोतलबंद हवा

❑ प्रमोद भार्गव

देश में फैल रही इस जहरीली हवा की पृष्ठभूमि इस बात की तस्दीक है कि यदि बोतलबंद हवा का कारोबार भारत में शुरू होता है तो इसका विस्तार दिन दूना, रात चौगूना फैलने की उम्मीद है। लेकिन इससे शंका यह उभरती है कि हवा का कारोबार कहीं प्रदूषण मुक्ति के स्थाई समाधान के उपायों पर भारी न पड़ जाए?

व्यावसायिक बुद्धि और नवोन्मेष की ललक हो तो बाजार में उम्मीदों के नये-नये द्वार आसानी से खुल जाते हैं। वैसे भी संभावनाओं का कभी अंत नहीं होता। वाकपटु लोग गंजों को भी कंघी बेचने में कामयाब हो जाते हैं। कनाडा की कंपनी 'वाइटैलिटी एयर बैंफ एंड लेक' ने कुछ ऐसा ही अनूठा करिश्मा कर दिखाया है। कंपनी ने वनाच्छादित पहाड़ों और जंगलों की हवा को बोतलबंद पानी की तरह बेचने का धंधा शुरू किया है। बोतल में बंद हवा बेचने का यह अवसर दुनिया में बढ़ते वायु प्रदूषण ने दिया है। दूषित हवा से बेचैन और पीड़ित लोग इसे हाथोंहाथ खरीद रहे हैं। महानगरों में बढ़ता वायु प्रदूषण, दूषित औद्योगिक कचरे और कारों से उगलते धुंए को माना जा रहा है। औद्योगिक घरानों के दबदबे के चलते औद्योगिक उत्पादन घटाना तो मुश्किल है, ऐसे में कारोबारियों को बोतलबंद हवा के रूप में नया सुरक्षा कवच मिल गया है। जाहिर है, भारत समेत दुनिया के कई महानगरों में कारों पर नियंत्रण की जो मुहिम शुरू हुई है, उसे धक्का लग सकता है। इसके उलट यही कारोबारी कार के साथ हवा की बोतलें बतौर उपहार देने का फंडा भी शुरू कर सकते हैं। मसलन बाजार में कारों के साथ हवा का बाजार तो बढ़ेगा, किन्तु इस महंगी हवा को खरीदकर इस्तेमाल करना गरीब के वश की बात नहीं है।

ब्रह्माण्ड में पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है, जहां वायु होने के कारण जीवन सम्भव है। वायु में नाइट्रोजन की मात्रा सर्वाधिक 21 प्रतिशत होती है। इसके अलावा ऑक्सीजन 0.03 प्रतिशत और अन्य गैसें 0.97 प्रतिशत होती है। वैज्ञानिकों के आकलन के अनुसार पृथ्वी के वायुमंडल में करीब 6 लाख अरब टन हवा है। हवा, पृथ्वी, जल, अग्नि और आकाश जैसे जीवनदायी तत्त्वों में से एक तत्त्व है। कोई भी प्राणी भोजन और पानी के बिना तो कुछ समय तक तो जीवित रह सकता है, लेकिन हवा के बिना कुछ मिनट ही बमुश्किल जीवित रह सकता है। मनुष्य दिन भर में जो भी कुछ खाता-पीता है, उसमें 75 फीसदी भाग हवा का होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य एक दिन में 22 हजार बार सांस लेता है। इस तरह से वह प्रतिदिन 15 से 18 किलोग्राम यानी 35 गैलेन हवा ग्रहण करता है। ऐसे में हवा दूषित मसलन जहरीली हो तो मानव शरीर पर उसके दुष्प्रभाव पड़ना तय है। वायु प्रदूषण के चलते वायु में भौतिक, रसायनिक या उसके जैविक गुणों में ऐसा कोई भी अवांछित परिवर्तन हो, जिसके द्वारा स्वयं मनुष्य या अन्य जीवों को जीने में परेशानी अनुभव होने लगे या सांस लेने में दिक्कत आने लगे, तो जान लीजिए हवा प्रदूषित हो रही है। हवा में प्रदूषण बढ़ने के साथ प्राकृतिक संपदा भी नष्ट होने लग जाती है। भारत की बात तो छोड़िए, अमेरिका जैसे सुविधा-सम्पन्न देश में भी हर साल 32 करोड़ 50 लाख टन से अधिक मूल्य के खाद्यान्न नष्ट हो जाते हैं।

वायु के ताप और आपेक्षिक आर्द्रता का संतुलन गड़बड़ा जाने से हवा प्रदूषण के दायरे में आने लग जाती है। यदि वायु में 18 डिग्री सेल्सियस ताप और 50 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता हो तो वायु का अनुभव सुखद लगता है। लेकिन इन दोनों में से किसी एक में वृद्धि, वायु को खतरनाक रूप के बदलने का काम करने लग जाती है। 'राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मूल्यांकन कार्यक्रम' (एनएसीएमपी) के मातहत 'केन्द्रीय प्रदूषण मंडल (सीपीबी) वायु में विद्यमान ताप और आर्द्रता के घटकों को नापकर यह जानकारी देता है कि देश के किस शहर में वायु की शुद्धता अथवा प्रदूषण की क्या स्थिति है। नापने की इस विधि को 'पार्टिकुलेट मैटर' मसलन 'कणीय पदार्थ' कहते हैं। प्रदूषित वायु में विलीन हो जाने वाले ये पदार्थ हैं, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड और सल्फर डाईऑक्साइड, सीपीबी द्वारा तय मापदंडों के मुताबिक उस वायु को अधिकतम शुद्ध माना जाता है, जिसमें प्रदूषकों का स्तर मानक मान के स्तर से 50 प्रतिशत से कम हो। इस लिहाज से दिल्ली समेत भारत के जो अन्य शहर प्रदूषण की चपेट में हैं, उनके वायुमंडल में सल्फर डाईऑक्साइड का प्रदूषण कम हुआ है, जबकि नाइट्रोजन डाईऑक्साइड का स्तर कुछ बढ़ा है।

सीपीबी ने उन शहरों को अधिक प्रदूषित माना है, जिनमें वायु प्रदूषण का स्तर निर्धारित मानक से डेढ़ गुना अधिक है। यदि प्रदूषण का स्तर मानक के तय मानदंड से डेढ़ गुना के बीच हो तो उसे उच्च प्रदूषण कहा जाता है। और यदि प्रदूषण मानक स्तर के 50 प्रतिशत से कम हो तो उसे निम्न स्तर का प्रदूषण कहा जाता है। वायुमंडल को प्रदूषित करने वाले कणीय पदार्थ, कई पदार्थों के मिश्रण होते हैं। इनमें धातु, खनिज, धुएं, राख और धूल के कण शामिल होते हैं। इन कणों का आकार भिन्न-भिन्न होता है। इसीलिए इन्हें वर्गीकृत करके अलग-अलग श्रेणियों में बांटा गया है। पहली श्रेणी के कणीय पदार्थों

को पीएम-10 कहते हैं। इन कणों का आकार 10 माइक्रॉन से कम होता है। दूसरी श्रेणी में 2.5 श्रेणी के कणीय पदार्थ आते हैं। इनका आकार 2.5 माइक्रॉन से कम होता है। ये कण शुष्क व द्रव्य दोनों रूपों में होते हैं। वायुमंडल में तैर रहे दोनों ही आकारों के कण मुंह और नाक के जरिए श्वास नली में आसानी से प्रविष्ट हो जाते हैं। ये फेफड़ों तथा हृदय को प्रभावित करके कई तरह के रोगों के जनक बन जाते हैं। आजकल नाइट्रोजन डाई-ऑक्साइड देश के नगरों में वायु प्रदूषण का बड़ा कारक बन रही है।

वैसे तो अमेरिका और मध्य पूर्व के कई देशों में हवा का कारोबार मृगछौने की तरह खूब कुलांचें मारने लगा है, लेकिन चीन के वायुमंडल में छाये वायु प्रदूषण से इसमें भारी उछाल आया है। हालत यह है कि चीन में लोग उपहार के तौर पर बोतलबंद हवा अपने रिश्तेदारों और मित्रों को देने लगे हैं। ऐसे में सोचनीय प्रश्न है कि हवा का यह कारोबार भारत में कारगर साबित होगा? उल्लेखनीय है कि विश्व आर्थिक मंच ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि दुनिया के 20 प्रदूषित शहरों में 18 एशिया में हैं। इनमें भी 13 भारत में हैं। भारत में वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण बढ़ते वाहन और उनका सह-उत्पाद प्रदूषित धुंधा माना जा रहा है। हवा में घुलते इस जहर का असर केवल महानगरों में ही नहीं, छोटे नगरों में भी प्रदूषण का सबब बन रहा है। यही कारण है कि दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, अमृतसर, इंदौर और अहमदाबाद जैसे शहरों में प्रदूषण खतरनाक स्तर की सीमा लांघने को तत्पर दिखायी दे रहा है।

दिल्ली में लुटियंस क्षेत्र आबोहवा की दृष्टि से सबसे अधिक खुशनुमा इलाका माना जाता है, लेकिन इसी क्षेत्र में आने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का निवास स्थल 7 रेसकोर्स भी दूषित हवा की चपेट में है। इस आवास के बाहर पीएम ट्रैकर से प्रदूषण का स्तर हाल ही में जांचा गया तो आंकड़े हैरान करने वाले आए। यहां कणीय पदार्थ यानी पीएम की मात्रा 2000 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर के ऊपर थी। जबकि दिल्ली में 60 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर को एकदम साफ प्राकृतिक हवा का कारक माना जाता है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवारमेंट की मशीन ने भी यहां प्रदूषण का स्तर औसत स्तर से करीब 14 गुना ज्यादा दर्ज किया है। साफ है, दिल्ली के वायुमंडल में जहरीली हवा तैर रही है।

केन्द्रीय प्रदूषण मंडल भी देश के 121 शहरों में वायु प्रदूषण का आकलन करता है। इसकी एक रिपोर्ट के मुताबिक देवास, कोझिकोड एवं तिरुपति को अपवाद स्वरूप छोड़ दें, तो बाकी सभी शहरों में प्रदूषण एक बड़ी समस्या के रूप में वायुमंडल में जगह बनाता जा रहा है। इसकी वजह तथाकथित वाहन क्रांति है। जिस गुजरात को हम आधुनिक विकास का मॉडल मानकर चल रहे हैं, वहां भी प्रदूषण के हालात भयावह हैं। कुछ समय पहले टाइम्स पत्रिका में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के चार प्रमुख प्रदूषित शहरों में गुजरात का बापी शहर भी शामिल है। यहां 400 किलोमीटर लंबी औद्योगिक विकास की बड़ी कीमत चुका रहे हैं। बापी के भूगर्भीय जल में पारे की मात्रा विश्व स्वास्थ्य संगठन के तय मानकों से 96 प्रतिशत ज्यादा है। यहां की वायु में धातुओं के कण बड़ी संख्या में हैं, जो फसलों पर संक्रमण का कहर ढहा रहे हैं।

देश में फैल रही इस जहरीली हवा की पृष्ठभूमि इस बात की तस्दीक है कि यदि बोतलबंद हवा का कारोबार भारत में शुरू होता है तो इसका विस्तार दिन दूना, रात चौगूना फैलने की उम्मीद है। लेकिन इससे शंका यह उभरती है कि हवा का कारोबार कहीं प्रदूषण मुक्ति के स्थाई समाधान के उपायों पर भारी न पड़ जाए? इस बोतलबंद हवा की जानकारी आने से पहले दिल्ली में बड़ी कारों के पंजीयन पर रोक और एक दिन सम और दूसरे दिन विषम संख्या की कारों को चलाने की व्यवस्था शुरू हुई है। हवा को स्वच्छ बनाये रखने के ये उपाय कारगर और बहुजन हितकारी हैं। लेकिन अब कार निर्माता कंपनियां बोतलबंद हवा के जरिए शुद्ध हवा का विकल्प उपहार में देकर सरकार के समक्ष नई कारों के पंजीयन से रोक हटाने का सुझाव रख सकती हैं। क्योंकि जब दिल्ली सरकार ने सम-विषम संख्या की कारें चलाने का फार्मूला पेश किया था, तब ये कंपनियां इस फार्मूले को लागू करने के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय चली गयी थीं। तब न्यायालय ने दलील दी थी कि 'आपको कारें बेचने की पड़ी है, जबकि लोगों के प्राण जोखिम में हैं।' वैसे भी बोतलबंद हवा, वायु की शुद्धि का तात्कालिक व्यक्तिगत उपाय तो है, लेकिन वायुमंडल से प्रदूषण मुक्ति का व्यापक एवं स्थाई हल कतई नहीं है।

कंपनी ने फिलहाल 'बैंफ एयर' और 'लेक लुईस' नाम से दो प्रकार की हवाबंद बोतलें बाजार में उतारी हैं। बैंफ एयर की तीन लीटर की बोतल की कीमत 20 कनाडाई डालर, यानी भारतीय मुद्रा में करीब 962 रुपये है। लेक लुईस बोतल में 7.7 लीटर हवा है। इसकी कीमत 32 कनाडाई डॉलर, मसलन 1532 रुपये है। फिलहाल भारत में इस हवा का व्यापार शुरू नहीं हुआ है, लेकिन जिस तेजी से इस कारोबार में उछाल आ रहा है, उस परिप्रेक्ष्य में तय है, देर-सबेर हवा की बोतल भारतीय बाजार का हिस्सा बन जायेगी। साफ है, इस बोतल का उपयोग धनी लोग ही कर पायेंगे।

वाइटैलिटी एयर बैंफ एंड लेक कंपनी ने 2014 में प्रयोग के तौर पर हवा भरी थैलियां बेचने की शुरुआत की थी। उस वक्त किसी को अंदाजा नहीं था कि यह पहल भविष्य में वाणिज्यिक दृष्टि से कितनी महत्त्वपूर्ण होने जा रही है। कंपनी के संस्थापक मोसेज लेक का कहना है कि उनके द्वारा बाजार में लायी गयी थैलियों की पहली

खेप तुरंत बिक गयी। इससे उनके हौसले को बल मिला और फिर इस कारोबार को फुलटाइम व्यवसाय में बदल दिया। कंपनी ने हाल ही में चीन में बोतलबंद हवा का व्यापार शुरू किया है। यहां कारोबार के उद्घाटन वाले दिन ही 500 बोतलें हाथोंहाथ बिक गयीं और अब अमेरिका व मध्य पूर्व के देशों के बाद चीन बोतलबंद हवा का खरीददार सबसे बड़ा देश बन गया है। भारत में खतरनाक स्तर पर पहुंच चुकी इस जहरीली हवा के चलते कंपनी भारत में भी बाजार तलाश रही है। यदि इस हवा की आमद भारत में हो जाती है तो जिस तरह से प्रदूषित हो रहे जलस्त्रोतों को प्रदूषण मुक्त बनाने की कोशिशें नाकाम होती रही हैं, उसी तरह वायु को प्रदूषण मुक्त बनाने की संभावनाएं भी हवा के कारोबारी ठप कर देंगे। ❑

भगवान के दिल को न दुखायें

''आज दुनिया की हालत बहुत नाजुक है। हमारे देश में भी चिन्ताजनक परिस्थितियां हैं। इन सबका विचार करते हुए हमको बुद्धि में समत्व और शांति रखनी चाहिए।

एक बात विशेष ध्यान में रखनी चाहिए कि भगवान की सबसे श्रेष्ठ मूर्ति जो हमारे सामने खड़ी है, वह है मानव-मूर्ति। मानव-मानव में द्वेष भावना भगवान के और धर्म के नाम से बढ़े, इससे भगवान को जितना दुःख हो सकता है, उतना शायद ही और किसी पाप से होगा। इसलिए मेरी आप लोगों से हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि हम अपने देश में ऐसा कोई काम न करें, जिससे हमारे देश की इज्जत घटे और भगवान के दिल को दुःख पहुंचे।''

—विनोबा

मत-सम्मत

प्रदूषण नियंत्रण के प्रति उदासीनता

❑ **डॉ. ओ. पी. जोशी**

सम-विषम की व्यवस्था से पर्यावरण सुधार के प्रति जागरूक लोग यदि 10-15 लाख कारें सड़क पर नहीं उतारते हैं तो न केवल प्रदूषण कम होगा अपितु जाम भी कम लगेंगे एवं लोग अपने कार्यालय या घर पर कम समय में पहुंचेंगे। नई व्यवस्था लागू करने से समस्याएं तो आती हैं, परंतु उन समस्याओं के डर से नई व्यवस्था लागू ही न करना एक प्रकार का पलायन है।

पिछले कुछ महीनों में देश में घटे घटनाक्रम यह दर्शाते हैं कि शायद हम प्रदूषण नियंत्रण एवं पर्यावरण सुधार की कोई ऐसी प्रक्रिया चाहते हैं, जिससे कि हमारी सुख-सुविधा एवं परम्पराओं में कोई खलल न पड़े। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो न ही हम कोई ठोस प्रयास करते हैं एवं न ही किसी के सार्थक प्रयासों में मदद कर समर्थन देते हैं। सबसे दुखद बात यह है कि प्रदूषण नियंत्रण एवं पर्यावरण सुधार के कल्याणकारी कार्य भी अब राजनैतिक तराजू पर तौले जाने लगे हैं।

कोई दल सुधार का श्रेय लेकर अपना वोट बैंक न बढ़ा लें, इसलिए दूसरे दल उसका विरोध कर कई अड़ंगे डालने का प्रयास करते हैं। दिल्ली, बनारस एवं मध्य प्रदेश के घटनाक्रम इसकी पुष्टि करते हैं। दिल्ली के प्रदूषण की खराब स्थिति को थोड़ा सुधारने हेतु एनजीटी ने जब पन्द्रह वर्ष पुराने वाहनों को हटाने के लिए कहा तो इसका विरोध किया गया एवं कई समस्याएं बतायी गयीं। यह निश्चित है कि उचित देखभाल के अभाव में पुराने वाहन काफी प्रदूषण फैलाते हैं। हाल ही में दिल्ली के बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रण करने हेतु सर्वोच्च न्यायालय ने 1 नवंबर 2015 से व्यावसायिक डीजल वाहनों से प्रवेश के समय प्रायोगिक तौर पर प्रदूषण कर (हरित शुल्क) वसूलने हेतु नगर निगमों को कहा। इसके पूर्व दिल्ली की सरकार ने भी दिल्ली में प्रवेश करने वाले व्यावसायिक वाहनों से प्रदूषण कर लेने की बात कही थी। बाद में एन.जी.टी. (राष्ट्रीय हरित अधिकरण) ने भी इस प्रकार की पेशकश की थी।

दिल्ली के लगभग 120 स्थानों (प्रवेश केन्द्र) पर व्यावसायिक वाहनों से पथकर (टोल) वसूला जाता है। दिल्ली की तीनों निगमों की ओर से दक्षिणी निगम पथकर लेता है। सर्वोच्च न्यायालय के प्रदूषण कर वसूलने के आदेश पर दक्षिण स्थित निगम की उस कंपनी ने मना किया, जिसका टोल वसूली का अनुबंध था। कंपनी का कहना था कि उसका अनुबंध केवल टोल वसूली का है, अतः वह दूसरा कर नहीं वसूलेगी। कंपनी ने अदालत में पुनर्विचार याचिका लगाकर प्रदूषण कर वसूली 1 दिसंबर से करने को कहा। परंतु अदालत ने कहा कि प्रदूषण की व्यापक समस्या को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इस सारे झमेले का मुख्य कारण था कि नगर निगम को प्रदूषण कर की जमा राशि दिल्ली सरकार को सौंपनी थी। नगर निगम एवं सरकार में अलग-अलग दलों का वर्चस्व है। भाजपा बहुमत वाली नगर निगम शायद यह नहीं चाहती होगी कि प्रदूषण कर की जमा राशि आप दल की दिल्ली सरकार को दी जाए। पथ कर वसूलने वाली कंपनी एवं दिल्ली नगर निगम प्रदूषण की गंभीरता को अपनी सार्वजनिक एवं नैतिक जिम्मेदारी

समझकर बगैर राजनैतिक भेदभाव के यदि जमा रकम सरकार को देते तो शायद उस रकम से दिल्ली सरकार द्वारा किया गया प्रदूषण नियंत्रण तो सभी के लिए लाभकारी था। क्योंकि पूरी दिल्ली का पर्यावरण तो एक ही है।

शीतकाल के प्रारम्भ होने पर दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रण करने हेतु दिल्ली उच्च न्यायालय व एन.जी.टी. ने जब फटकार लगायी तो दिल्ली सरकार ने प्रायोगिक तौर पर 1 जनवरी 2016 से सम व विषम नंबर के वाहनों को अलग-अलग दिनों पर चलाने का निर्णय लिया। आपातकालीन व जन-यातायात वाहनों को इस व्यवस्था से छूट प्रदान की गयी। ऐसी व्यवस्था दुनिया के कई देशों के शहरों में सफलतापूर्वक चल रही है। दिल्ली में 80 लाख से ज्यादा वाहन हैं, जिनमें निजी कारों की संख्या 30 लाख के आसपास बतायी गयी है। सम-विषम की व्यवस्था से पर्यावरण सुधार के प्रति जागरूक लोग यदि 10-15 लाख कारें सड़क पर नहीं उतारते हैं तो न केवल प्रदूषण कम होगा अपितु जाम भी कम लगेंगे एवं लोग अपने कार्यालय या घर पर कम समय में पहुंचेंगे। नई व्यवस्था लागू करने से समस्याएं तो आती हैं, परंतु उन समस्याओं के डर से नई व्यवस्था लागू ही न करना एक प्रकार का पलायन है। दिल्ली की नई व्यवस्था पर भी लोग कई प्रकार की खामियां बताकर रोकना चाहते हैं। शायद यह वह लोग हो सकते हैं जो अपनी सुख-सुविधाओं को प्रदूषण से ज्यादा महत्त्व देकर एक दिन भी सार्वजनिक वाहनों या कार-फूल में जाकर किसी प्रकार की तकलीफ नहीं उठाना चाहते। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति ठाकुर, उद्योगपति राहुल बजाज एवं पूर्व केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने भी इसे सही कदम बताया है। अन्य लोगों एवं संगठनों को भी इसे सफल बनाने के प्रयास करना चाहिए।

दिल्ली के बाद हम बनारस चलते हैं। वहां भी स्थानीय प्रशासन ने न्यायालयीन आदेश का पालन कर गंगा में प्रतिमाओं के विसर्जन को रोका तो कई साधु-संन्यासी भड़क गये। उन्होंने कहा कि प्रतिमाओं को गंगा में विसर्जन उनकी परम्परा एवं धर्म है जिसे कोई नहीं रोक सकता। न्यायालय के आदेश का पालन करवाने में साधु संतों को तो मदद करनी थी, ताकि गंगा कुछ साफ हो सके? साधु संतों द्वारा इस प्रकार की गयी मदद निश्चित रूप से गंगा के प्रति बड़ा उपकार होता। दिल्ली, बनारस के बाद अब मध्य प्रदेश की चर्चा। मध्य प्रदेश में एवं विशेषकर इन्दौर तथा अन्य शहरों में बढ़ते प्रदूषण को देखकर एन. जी. टी. ने परिवहन एवं खाद्य आपूर्ति विभागों को ऐसी व्यवस्था लागू करने को कहा कि बगैर पी.यू.सी. (पाल्यूशन अंडर कंट्रोल) प्रमाण-पत्रों के वाहनों को पेट्रोल-डीजल नहीं दिया जाए। दोनों विभाग जब व्यवस्था लागू करने में असमर्थ रहे तो एन.जी.टी. ने फिर कहा कि व्यवस्था लागू होने तक 25 करोड़ की राशि सुरक्षा निधि (सिक्युरिटी) के बतौर जमा करे। दोनों विभागों ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर बताया कि उचित संसाधन न होने से व्यवस्था लागू करना संभव नहीं है एवं पी. यू. सी. के बगैर यदि पेट्रोल-डीजल नहीं दिया तो कानून व्यवस्था की स्थिति भी बिगड़ सकती है। इस आधार पर न्यायालय ने सुरक्षा निधि जमा करने पर रोक लगा दी। सारा घटनाक्रम प्रदूषण नियंत्रण के प्रयासों की ओर बरती जा रही उदासीनता को दर्शाता है। दोनों विभाग यदि प्रदूषण नियंत्रण के लिए जागरूक एवं जिम्मेदार होते तो पुलिस विभाग, प्रदूषण नियंत्रण मंडल एवं कुछ निजी संगठनों से सहयोग लेकर इसे लागू करते। अब राज्य सरकार यह व्यवस्था 1 अप्रैल, 2016 से लागू करना चाहती है, जिसके लिए पी. यू. सी. केन्द्र खोलने के नियम शिथिल किये जा रहे हैं। समय पर पी. यू. सी. केन्द्र खोलने से प्रदूषण में थोड़ा तो सुधार होता। सारी घटनाएं एवं उनसे जुड़ी चर्चाएं एवं क्रियाएं यह दर्शाती हैं कि प्रदूषण को हम धीरे-धीरे अंगीकार करते जा रहे हैं। यदि इसी प्रकार चलता रहा तो, हो सकता है कि भविष्य में हम प्रदूषण को कोई समस्या ही न माने। ❑

सत्य का दिव्य संदेश

❑ महात्मा गांधी

सत्य...क्या है? यह एक कठिन प्रश्न है, लेकिन अपने लिए मैंने इसे यह कहकर सुलझा लिया है कि जो तुम्हारे अंतःकरण की आवाज कहे, वह सत्य है। आप पूछते हैं कि यदि ऐसा है तो भिन्न-भिन्न लोगों के सत्य परस्पर भिन्न और विरोधी क्यों होते हैं? चूंकि मानव-मन असंख्य माध्यमों के जरिए काम करता है और सभी लोगों के मन का विकास एक-सा नहीं होता, इसलिए जो एक व्यक्ति के लिए सत्य होगा, वह दूसरे के लिए असत्य हो सकता है। अतः जिन्होंने ये प्रयोग किए हैं, वे इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि इन प्रयोगों के करते समय कुछ शर्तों का पालन करना जरूरी है।...

ऐसा इसलिए है कि आजकल हर आदमी किसी तरह की कोई साधना किए बगैर अंतःकरण के अधिकार का दावा कर रहा है, और हैरान दुनिया को जाने कितना असत्य थमाया जा रहा है। मैं सच्ची विनम्रता के साथ आपसे कहना चाहता हूं कि जिस व्यक्ति में विनम्रता कूट-कूट न भरी हो, उसे सत्य नहीं मिल सकता। यदि आपको सत्य के सागर में तैरना है, तो आपको अपनी हस्ती को पूरी तरह मिटा देना होगा।

केवल सत्य और प्रेम—अहिंसा—ही महत्त्वपूर्ण है। जहां ये हैं, वहां अंततः सब कुछ ठीक हो जायेगा। इस नियम का कोई अपवाद नहीं है। ❑

मत-सम्मत

आत्ममंथन से सुलझेंगी ये उलझी गांठें

❑ अरुण तिवारी

तमाम ताजा घटनाक्रमों के आलोक में स्पष्ट है कि खेती और पानी को लेकर संकट बढ़े हैं; सो, रार भी बढ़ चली है। नदी मध्य बांध, इसका विशेष कारण बनते जा रहे हैं। बांधों के कारण मुनाफे से ज्यादा नुकसान हो रहा है। मेहनतकश किसान संकट में हैं और उसका उत्पादन बेचने वाला व्यापारी मौज कर रहा है।

एक ओर तो भारत सरकार, चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र पर पनबिजली परियोजनाओं के बनाने को लेकर चिन्तित है, दूसरी ओर उसकी चिन्ता है कि भारत में बांध आधारित पनबिजली परियोजनाओं को जल्दी-से-जल्दी मंजूरी कैसे दे। उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की चिन्ता है कि हीराकुंड, चिपिलिमा और बालीमेला पनबिजली परियोजनाओं की क्रमशः दो, एक और छह इकाइयों का जल्द-से-जल्द नवीनीकरण कैसे किया जाये। इसके लिए उन्होंने 800 करोड़ तक खर्च करने को तैयार हैं।

बढ़ते विवाद, बढ़ती लागत : पनबिजली में सार्वजनिक क्षेत्र की अग्रणी कंपनी एन.एच.पी.सी. चिन्तित है कि उसके द्वारा तैयार बिजली की लागत, मौजूदा दरों से ज्यादा होने के कारण राज्य बिजली बोर्ड आगे खरीद में रुचि नहीं ले रहे हैं। कंपनी कह रही है कि राज्यों के बीच विवाद, भौगोलिक मुद्दों तथा स्थानीय नागरिकों के विरोध के कारण लागत बढ़ रही है। लोग कह रहे हैं कि कंपनी के कारण, उनके जीवन की सांसत बढ़ रही है। आंध्र प्रदेश में गोदावरी पर बनी इंदिरा सागर पोलावरम् अंतर्राज्यीय परियोजना से हुए विस्थापन के कारण आदिवासी-ग्रामीण की जिन्दगी में कठिनाई बढ़ गयी है। अतः आर.टी.आई. कार्यकर्ता डी. एस. कुमार जानना चाहते हैं कि परियोजना को वन विभाग से मंजूरी व मौके का सच क्या है? मुख्य सूचना अधिकारी ने सच बताने के लिए केन्द्र को निर्देश तो दे दिया है, किन्तु क्या इससे विस्थापितों के कष्ट कम हो जायेंगे?

महाराष्ट्र एक, विवाद अनेक : बांधों के कारण महासिर मछली की जान सांसत में है। वे अपना विरोध भले ही दर्ज नहीं कर पा रही हों, किन्तु मुम्बई की पिंजल गार्गे बांध परियोजना के कारण हुए विस्थापन से 17 गांव सांसत में आये हैं, तो वे विरोध करेंगे ही।

भामा अस्खेद बांध परियोजना स्थल पर शिवसेना कार्यकर्ताओं द्वारा पत्थरबाजी को हिंसात्मक होने के नाते आप अवश्य नाजायज कह सकते हैं, किन्तु क्या विस्थापित किसानों द्वारा अपने पुनर्वास और मुआवजे के मांग को लेकर किये जा रहे विरोध-प्रदर्शन को नाजायज ठहराया जा सकता है? नासिक के माकाणे बांध की लागत तो बिना विरोध ही 36 करोड़ ही बढ़ गयी। नागपुर की गोसीखुर्द ब्रांच कैनाल और राइट बैंक कैनाल परियोजनाओं में बढ़ती लागत तो अब भ्रष्टाचार निरोधक शाखा की जांच के दायरे में भी आ गयी है।

बांध बहुत, पर जलाशय सूखे : मराठवाड़ा, सूखे से त्राहि-त्राहि कर रहा है। मराठवाड़ा में किसानों की आत्महत्या का आंकड़ा, पिछले 10 माह में आठ सैकड़ा की संख्या पार कर गया है। उस्मानाबाद, बीड़ और नांदेड क्रमशः सबसे अधिक दुष्प्रभावित जिले हैं। मराठवाड़ा के सभी बांधों में उनकी कुल जल भंडारण क्षमता का मात्र 15 फीसदी पानी शेष है। मजालगांव, माजरा, लोअर टेरना यहां के सबसे बड़े बांध—जयकवाड़ी के जलाशय में तो उसकी कुल क्षमता का मात्र छह फीसदी पानी ही है। लिहाजा, मराठवाड़ा सिंचाई विकास निगम को आदेश करने पड़ रहे हैं कि जयकवाड़ी बांध के लिए, उत्तर महाराष्ट्र के बांध 12.85 हजार मिलियन क्यूबिक फीट पानी छोड़े। अब इस पर तो अमदनगर और नासिक के बीच विवाद होगा ही। नासिक कुंभ में शाही स्नान के लिए पानी छोड़ा, तो आखिर विवाद हुआ ही। मुम्बई हाईकोर्ट ने इसे नीति विरुद्ध बताया ही; कहा ही कि शाही स्नान आखिरी प्राथमिकता है और पेयजल पहली।

पहले पुनर्स्थापना, तब गेट बंदी : जब श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, उनकी चिन्ता थी कि सरदार सरोवर बांध की ऊंचाई और अधिक कैसे हो; अब भारत की सर्वोच्च अदालत की चिन्ता हो गयी है कि इस बढ़ी ऊंचाई के कारण संभावित विस्थापित लोगों की पुनर्स्थापना कैसे सुनिश्चित हो। अपने ताजा फैसले में उसने मध्य प्रदेश शासन को भी निर्देश दिया है कि सिर्फ प्रभावित के सबसे बड़े बेटे ही नहीं, बल्कि सभी वयस्क व अवयस्क बेटों को भूमि तथा आर्थिक मुआवजा दिया जाये। मुझे उम्मीद है कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा देने वाली सरकारें मुआवजा सूची में बेटे और बेटी...दोनों को शामिल करेंगी। खैर, सर्वोच्च न्यायालय ने साफ कह दिया है कि जब तक विस्थापित हुए अंतिम व्यक्ति की पुनर्स्थापना सुनिश्चित नहीं हो जाती, सरदार सरोवर के गेट बंद न किये जायें।

संकट में किसानी : सिंचाई के लिए बने बांध वाले राज्यों के किसानों में सबसे ज्यादा त्राहि-त्राहि है, तो वह पनबिजली वाले बांधों की नदियों में पानी की गुणवत्ता को

लेकर। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में नकदी फसलों को लेकर मौत पसरी है। नये राज्य के रूप में तेलंगाना ने 1,269 आत्महत्याओं का आंकड़ा पार कर लिया है। सूखे के कारण, आर्थिक नुकसान बेइंतहा है। पिछले तीन सप्ताह के दौरान आंध्र के अकेले अनंतपुर के हिस्से में 22 किसानों ने आत्महत्या की। जिन सिंचाई और उन्नत बीज आधारित कृषि नीति के कारण उड़ीसा का नबरंगपुर कभी मक्का के अंतर्राष्ट्रीय बीज बिक्री का केन्द्र बना, आज वही गिरावट के दौर में है। भारत की कपास, दुनिया में मशहूर है, फिर भी कपास किसानों की मौत के किस्से आम हैं। कभी भारत का खाद्य कटोरा कहे जाने वाले पंजाब का हाल किसी से छिपा नहीं है। इसने पहली हरित क्रांति के दूरगामी असर की पोल खोल दी है। इसकी एक के बाद, दूसरी फसल पिट रही है। बासमती, बढ़िया चावल है; फिर भी पंजाब के बासमती की, परमल चावल की तुलना में मांग कम है। इधर पूरे भारत में दालों का उत्पादन घट रहा है। महंगाई पर रार बढ़ रही है। ये रार और बढ़ेगी; क्योंकि मौसम बदल रहा है। कहीं गरमी बढ़ रही है, तो कहीं सर्दी। गर्मी के मौसम लम्बे हो रहे हैं। सर्दियों की अवधि घट रही है। बसंत और हेमंत गायब हो रहे हैं। उन्नत बीज, कीटों का प्रहार झेलने में नाकामयाब साबित हो रहे हैं। देशी बीजों को बचाने की कोई जद्दोजहद सामने नहीं आ रही है।

आत्ममंथन जरूरी : इन तमाम ताजा घटनाक्रमों के आलोक में स्पष्ट है कि खेती और पानी को लेकर संकट बढ़े हैं; सो, रार भी बढ़ चली है। नदी मध्य बांध, इसका विशेष कारण बनते जा रहे हैं। बांधों के कारण मुनाफे से ज्यादा नुकसान हो रहा है। मेहनतकश किसान संकट में हैं और उसका उत्पादन बेचने वाला व्यापारी मौज कर रहा है।

यह विरोधाभासी चित्र है। ऐसा न हो। क्या इसके लिए जरूरी नहीं कि एक बार बैठकर किसान और बाजार के तालमेल को बना लें? क्या जरूरी नहीं कि हम अपनी सिंचाई योजनाओं, परियोजनाओं और पद्धतियों का पुनर्आकलन कर लें? पनबिजली बांध परियोजनाओं के जलाशयों की जलक्षमता घट रही है। पानी से उत्पादित बिजली की लागत बढ़ रही है; तो क्या जरूरी नहीं कि पनबिजली परियोजनाओं को लेकर नित्य उठते स्थानीय मुद्दों और पर्यावरणीय मसलों का नीतिगत स्तर पर आत्ममंथन कर लें? क्या जरूर नहीं कि हर भूगोल व स्तर के बांधों की जरूरत और व्यवहारिकता का आकलन कर, एक बार बांध की नीति बना लें? शासन सोचे; वरना तो पानी, खेती, बिजली और बाजार की गांठें आपस में उलझने का वक्त आ ही गया है। हम लड़ और मर भी रहे हैं। ❑

धन-सम्पत्ति का अर्जन

❑ **महात्मा गांधी**

आज जिनके पास दौलत है, उनसे कहा है कि वे इस तरह आचरण करें मानो उनके पास यह दौलत गरीबों की ओर से एक न्यास के रूप में रखी गयी हो। आप कह सकते हैं कि न्यासिता कानून की दृष्टि से एक कल्पना मात्र है। लेकिन अगर लोग इस पर बराबर विचार करें और इसके अनुसार आचरण करने का प्रयास करें, तो दुनिया आज जितने प्रेम से चलायी जा रही है, उससे कहीं अधिक प्रेम का संचार हो सकता है। यूक्लिड की बिन्दु की परिभाषा की तरह पूर्ण न्यासिता भी एक अमूर्त विचार है और इसे प्राप्त करना भी उतना ही असंभव है। लेकिन अगर हम उसके लिए प्रयास करते रहें तो हम धरती पर समानता स्थापित करने की दिशा में अन्य किसी उपाय की अपेक्षा (न्यासिता के सिद्धांत पर आचरण करके) अधिक प्रगति कर सकते हैं।

मुझे पक्का विश्वास है कि जान-बूझकर गलत काम किए बिना भी दौलत कमाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, मेरी एक एकड़ भूमि में अचानक सोने की खान निकल सकती है। लेकिन मैं इस प्रस्थापना को स्वीकार करता हूं कि संपत्ति को अर्जित करने और उसका न्यासी बनने की अपेक्षा संपत्ति की कामना न करना बेहतर है। मैं अपनी संपत्ति बहुत पहले ही त्याग चुका हूं, जो इस बात का पर्याप्त प्रमाण होना चाहिए कि मैं औरों से क्या करने की अपेक्षा रखता हूं। लेकिन मैं उन लोगों को क्या सलाह दूं जो पहले से ही धनवान हैं या जो धन की कामना को छोड़ना नहीं चाहते? ऐसे लोगों को मेरा परामर्श यही हो सकता है कि वे अपने धन का इस्तेमाल सेवा के लिए करें।

यह सही है कि आम तौर से धनी लोग अपने ऊपर जरूरत से ज्यादा खर्च करते हैं। लेकिन इससे बचा जा सकता है। मैं ऐसे असंख्य धनवानों से मिला हूं जो अपने ऊपर खर्च करने में काफी कंजूस हैं। बहुत-से लोगों का यह स्वभाव ही होता है कि वे अपने ऊपर लगभग कोई पैसा खर्च नहीं करते और वे यह नहीं जानते कि ऐसा करने में कोई अच्छाई है।

यही बात धनवानों के बच्चों पर भी लागू होती है। व्यक्तिगत रूप से, मैं विरासत में मिली धन-दौलत में विश्वास नहीं करता। धनवान लोगों को अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए और उनका पालन-पोषण इस प्रकार करना चाहिए कि वे अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें। दुख का विषय है कि वे ऐसा नहीं करते। ऐसी स्थिति में, मैं अपनी सामान्य बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए वही परामर्श देता हूं जो व्यावहारिक हो।

हममें से जो लोग गरीबी को अपनाना अपना कर्तव्य समझते हैं और जिन्हें आर्थिक समानता में विश्वास है और चाहते हैं कि इसकी स्थापना हो, उन्हें धनवानों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए बल्कि अपनी गरीबी में सच्ची खुशी का प्रदर्शन करना चाहिए, जिसका अन्य लोग अनुकरण कर सकें। ❑

कविता

बापू! एक युग थे

अस्थि मांस, मज्जा की
सीमा में बंधा कोई
पार्थिव शरीर न थे
वे तो एक युग थे।
परतंत्रता की शृंखला से
जकड़ा हुआ था देश,
अन्याय शिला से, धरा पीसी जाती थी।
अशिक्षा, असंस्कार, भेद-भाव,
ऊंच-नीच, ऐसे गहन गर्त थे
डूब गया देश था।
देश विखंड था–क्षुद्र, तुच्छ, स्वार्थों में
उसकी मेधावी शक्ति
खंड-खंड बिखरी थी।
दानव के पंजों-सा
देश के शरीर पर, अपने नख गाड़े
बैठा था साम्राज्यवाद!
श्री, शक्ति, शोभा, सम्पन्नता
बूंद-बूंद रक्त से, देश के निचुड़ गये।
देश जब मलीन था, देश जब विपन्न था,
देश निर्जीव था, तेज हत, श्रीहत
गांधी अब आंधी बन
देश में अवतरित हुए।
निर्बल शरीर, किन्तु कैसी मनस्विता
महा शक्तिशाली से
निःसम्बल जुटा उठे
एक नभ-भेदी स्वर
उसने उठाया था
मूक, रुद्ध मानव में
नये बोल गूंज उठे।
ऐसी एक चिनगारी
लेकर वह आया था
आग की लहर-सा
सुप्त देश मचल उठा।
दुर्बल से पांवों में
ऐसा बल लाया था
जिस ओर वे चले
सारा देश चल उठा।
युग के तैंतीस कोटि शीश,
एक शीश थे।
युग के तैंतीस कोटि कंठ,
एक कंठ थे।
युग की तैंतीस कोटि
ललकार एक थी
कोटि हाथ अहिंसा की
तलवार एक थी।
और फिर एक दिन
देश आजाद हुआ
स्वर्णिम बिहान हुआ,
किरणों का गान हुआ
और वह युग दीप
जीवनभर जिसके लिए
जूझा था, उसी हेतु
उसका निर्वाण हुआ।
स्नेह माटी, वर्तिका में
दीप नहीं बापू थे,
युग की गहराई की
पत्तों को चीर-चीर
वह महामणि थे,
जो धरती से निकले थे
जनता की व्यथा को
अन्याय, तमस, कटुता को
पराधीन जड़ता को,
अज्ञान गहन तम,
दैन्य, दुख, विदारने को
प्रभा पूर्ण, सूर्य थे
क्षितिज फाड़ निकले थे,
काल-दुर्निवार चक्र
उनको न रौंदता, अपने लिए नहीं
सबके लिए जीता था।
शिव के समान,
विश्व-कल्याण कामना से
अमृत का भाग छोड़,
कालकूट पीता था।
शहीदों की परम्परा
महापीठ कच्छप थी
लालसा स्वतंत्रता की
महा मेरू मंदर था।
सुदेव दनुज असुर नाग
सभी जाति, सम्प्रदाय
मिलकर सन्नद्ध थे
गूंजा भू अंबर था।
जनता के वासुकि का
महा रज्जु खिंचता था।
समता स्वतंत्रता का, अमृत अभीष्ट था।
मंथन रव गूंज उठा
धरती आलोडित थी।
सागर विलाडित था।
अमृत स्वतंत्रता का, विष से संलिष्ट था।
जहर उबलने लगा
परस्पर विद्वेष का
हिन्दू और मुसलमान
आपस में जूझ पड़े
देश खंड-खंड हुआ
दिलों में दरार पड़ी
भूल गये मानवता
नफरत की जलती हुई
ज्वाला में कूद पड़े
तब वह महा मानव
शीतल अनुलेपन से
नोआखाली के खंडहरों में घूमा
भारत आजाद हुआ
घर-घर निनाद हुआ
भारत का भव्य भाल ऊषा ने चूमा।
स्वाभिमानी राष्ट्र ध्वज,
हर-हर लहराता है
शहीदों की बलिदानी,
गाथा दुहराता है। –सुरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा सुरभि प्रिन्टर्स, इंडियन प्रेस कॉलोनी, मलदहिया, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार। छपी प्रतियाँ : 1450